चन्दामामा
माँ - बच्चों का मासिक पत्र

Photo by S. H. Kotak

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

श्रृंगार है मगर प्यार नहीं

प्रेषक :
नन्दगोपाल नेयर, नागपुर

अधिक सौन्दर्य के लिए...
रेमि
स्नो
और
पाउडर

चन्दामामा

जून १९५८

"आइरिस इन्क्स"

हर फाउन्टेन पेन के लिए उम्दा,
१, २, ४, १२, २४ औन्स के बोतलों में मिलता है।

निर्माता :

रिसर्च केमिकल लेबोरेटरीज

मद्रास-४ * नई दिल्ली-१ * बेंगलोर-३

जब सब उपाय निष्फल हो जायें...

...तो

मॅनर्स ग्राइप मिक्श्चर

दीजिये

और देखिये मुस्कुराहट उसके चेहरे पर फिर खिल उठती है

४० पृष्ठों की "मदरक्राफ्ट एण्ड चाईल्डकेयर" नामक पुस्तिका मँगाने के लिये पी. ओ. बॉक्स नं. १७६, बम्बई १ को लिखिये, तथा साथ में ४० नये पैसों का टिकट और एक कूपन (जो हर शीशी के साथ होता है) अवश्य भेजिये।

उत्कृष्टता के प्रतीक मार्क को अवश्य देखें।

यह मॅनर्स उत्पादन का प्रमाण है।

GEOFFREY MANNERS & CO. PRIVATE LTD., BOMBAY · DELHI · CALCUTTA · MADRAS.

प्रसाद प्रोसेस (प्राइवेट) लिमिटेड, मद्रास-२६

प्रतिनिधि कार्यालय :—

बम्बई : लोटस हाऊस, मेरीन लाइन्स, बम्बई-१, फोन : २५११६२

बंगलोर : डी-११, ५ मेन रोड, गांधीनगर, बेंगलोर, फोन : ६२०६

For

PLEASANT READING &
PROFITABLE ADVERTISING

Chandamama Group

SERVING THE YOUNG
WITH A FINE
PICTORIAL STORY FARE
THROUGH

CHANDAMAMA
(Telugu, Hindi,
Kannada & Gujarati)

AMBULIMAMA
(Tamil)

CHANDOBA
(Marathi)

SINGLE COPY:
0:50 nP.

ANNUAL SUBSCRIPTION:
Rs. 6/-

CHANDAMAMA PUBLICATIONS
VADAPALANI :: MADRAS-26

आप पढ़ कर हैरान होंगे कि...

रोमन बादशाह नीरो के ज़माने में शीशे के एक गिलास की क़ीमत लगभग सत्ताईस हज़ार रुपये थी। अगर बद-क़िस्मती से किसी ग़ुलाम के हाथों एक गिलास टूट जाता तो उसकी जान पर बन आती — हालांकि यही गिलास आजकल चार छः आने में गली गली बिकते हैं!

लेकिन कुछ चीज़ें शाहों के ख़ज़ाने भी नहीं ख़रीद सकते। बादशाह बाबर का बेटा हुमायूँ एक बार ऐसा बीमार हुआ कि सब हकीम निराश हो गये! आख़िर बाबर ने बेटे की चारपाई के इर्द गिर्द चक्कर लगा कर ख़ुदा से दुआ की कि "ऐ मालिक, मेरे बेटे के बदले मेरी जान ले ले!" उसकी प्रार्थना सुनी गई और इस तरह बाबर ने अपने बेटे की जान की क़ीमत अपनी जान दे कर अदा की।

शीशे के गिलास की क़ीमत आज बहुत मामूली है लेकिन तंदुरुस्ती आज भी वैसी ही अनमोल है जैसी बाबर और हुमायूँ के ज़माने में थी। सच है कि तंदुरुस्ती हज़ार नेमत है। लेकिन तंदुरुस्ती को गंदगी से ख़तरा है क्योंकि हम कुछ भी करें, मैले ज़रूर हो जाते हैं और गंदगी में बीमारी के कीटाणु होते हैं जिन से तंदुरुस्ती को ख़तरा रहता है।

लाइफ़बॉय साबुन गंदगी के कीटाणुओं को धो डालता है और आप की तंदुरुस्ती की रक्षा करता है। हर रोज़ लाइफ़बॉय साबुन से नहाने की आदत डालिये और दिन भर ताज़गी का अनुभव कीजिये।

हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड द्वारा

L. 279-50 H
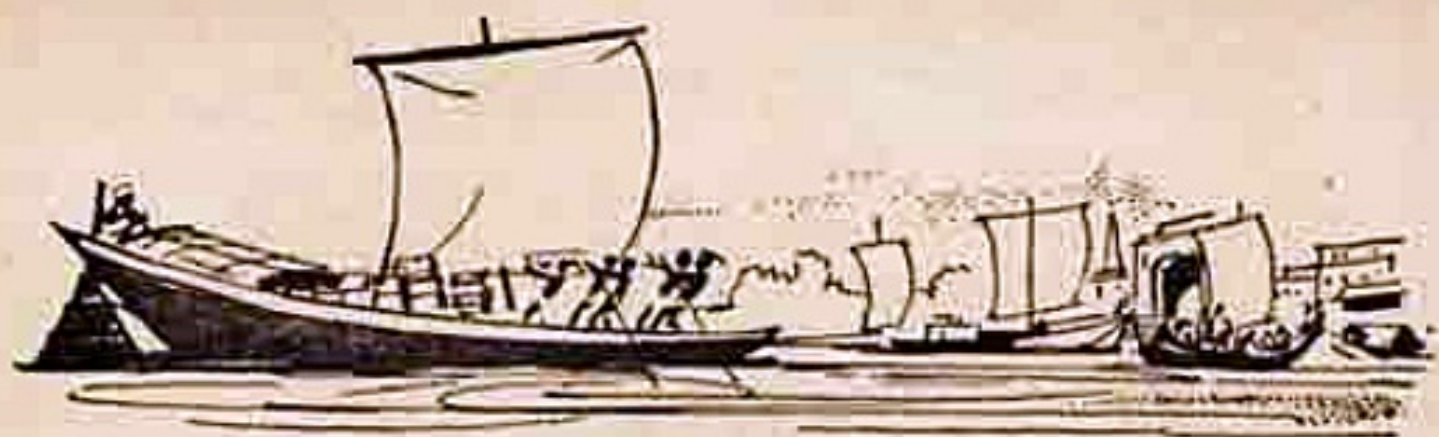
गंगा की झाँकी

हमारे इस विशाल और अनुपम देश में कई बड़ी बड़ी नदियाँ हैं। इनमें गंगा सबसे बड़ी और उपयोगी नदी है।

गंगा बर्फ से ढके हिमालय पहाड़ से उमड़ती है। बड़ी ऊँचाई से वह नीचे गिरती है और इसमें पिघले बर्फ का पानी मिलता रहता है। वहाँ का दृश्य बड़ा ही लुभावना है—चारों ओर शान्ति और सुन्दरता मन मोह लेती है।

नीचे मैदानी इलाकों में बहती गंगा एक साधारण धारा नहीं, वरन् एक विशाल नदी बन जाती है और साथ-साथ व्यस्त जलमार्ग भी—और फिर धीरे-धीरे समुद्र में जा मिलती है। इसके दोनों किनारों पर जगह-जगह घाट और जेटियाँ बनी हैं। एक से दूसरे किनारे पर आदमियों और माल-असबाब पहुँचाने के लिए नावें चलती हैं। और अक्सर इनमें चाय की पेटियाँ भी होती हैं, जिनपर "ब्रुक बॉण्ड चाय" की छाप लगी होती है। और हाँ, देश में और लोगों की तरह गंगा के तटवर्ती इलाकों में रहनेवाले भी चाय के बड़े प्रेमी हैं। घाट के नज़दीक चायखाने हैं। यहाँ यात्री चाय पीते और खरीदते हैं और माँझी नाव खेने के पहले एवं सूर्यास्त के समय अपना काम खतम करने के बाद चाय का मज़ा ज़रूर लेते हैं।

गंगा का इलाका सचमुच गंगा की देन है। दूर-दूर से यह नदी खाद मिली मिट्टी बहाकर लाती है जिससे आस-पास की ज़मीन उपजाऊ बन जाती है। नरम और उपजाऊ ज़मीन में अनेक तरह के अनाज पैदा होते हैं जिससे लाखों की जीविका चलती है। इसमें आश्चर्य नहीं कि इस इलाके को भारत का अन्न-भंडार कहते हैं। जैसे गंगा अपने आस-पास की भूमि को हराभरा बनाती है उसी प्रकार ब्रुक बॉण्ड चाय अच्छी और ताजी होने के कारण पीनेवालों के मन में खुशी और उत्साह का संचार करती है।

BB 235

ब्रुक बॉण्ड इण्डिया प्राइवेट लिमिटेड

चन्दामामा
संपादक : चक्रपाणी
"चन्दामामा" की धारावाहिक कहानियाँ पाठकों के लिए विशेष रूप से रोचक रही हैं।
इनमें से एक पुस्तकाकार में भी प्रकाशित हुई है।
अगले मास "तीन मान्त्रिक" और "अद्भुत दीप" खतम हो जायेंगे। भविष्य में, हम इनसे भी अधिक दिलचस्प, आकर्षक कहानियाँ धारावाहिक रूप में देने का प्रयत्न करेंगे।
वर्ष : ९ जून १९५८ अंक : १०

मुख-चित्र

अभिमन्यु और उत्तरा के विवाह के बाद, विवाह में आमन्त्रित, बड़े-छोटे सब लोग विराट के सभा मण्डप में एकत्रित हुए। विराट, द्रुपद, वासुदेव आदि बुजुर्ग मध्य में बैठे। एक तरफ़ पाण्डव, कृष्ण, बलराम, सात्यकी आदि बैठे हुए थे।

थोड़ी देर गप्पें चलती रहीं। फिर कृष्ण ने उठकर कहा—"पाण्डवोंने जुये में अपना राज्य खोकर, बारह वर्ष अरण्यवास और एक वर्ष अज्ञातवास भुगता। अब उनको उनका राज्य वापिस मिलना चाहिये। हमें ऐसा एक रास्ता सोचना चाहिये, जिससे न पाण्डवों की हानि हो न कौरवों की। अगर दुर्योधन ने राज्य में पाण्डवों को आधा हिस्सा न दिया तो युद्ध होगा और उसमें कौरव मारे जायेंगे।"

तुरत बलराम ने उठकर कहा—"हाँ, अगर बिना युद्ध के पाण्डवों को उनका हिस्सा मिलना है तो हमें दुर्योधन के पास एक दूत भेजना चाहिये। उस दूत को धृतराष्ट्र, शकुनि, दुर्योधन आदियों से बड़े विनयपूर्वक बातें करके उनकी कृपा पानी होगी, पाण्डवों को उनका राज्य दिलाना होगा।"

यह सुन सात्यकी गरमा गया। उसने कहा—"क्या ज़रूरत है कि पाण्डवों का दूत कौरवों के पाँव छुये! अगर उन्होंने युधिष्ठिर को आधा राज्य न दिया तो हम सब मिलकर उनका युद्ध में सर्वनाश कर सकते हैं।" वृद्ध द्रुपद ने भी सात्यकी का समर्थन किया। "मेरा पुरोहित, धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण आदि को अच्छी तरह जानता है। उसे दूत बनाकर भेजेंगे। यही नहीं, अच्छा होगा कि युधिष्ठिर भिन्न-भिन्न देशों को अपने आदमी भेजें और उनसे, यदि युद्ध शुरु हो जाये तो अपनी तरफ़ से लड़ने के लिए कहे।" कृष्ण ने इस परामर्श का अनुमोदन किया।

इसके बाद, कृष्ण आदि, अपने घर चले गये। सभा में भाग लेनेवाले सब राजा युद्ध की तैयारी करने लगे। द्रुपद ने अपने पुरोहित को सब बातें समझाकर धृतराष्ट्र के पास दूत बनाकर भेजा।

मित्र-संप्राप्ति

सोमिलक ने फिर से पकड़ी
वर्धमान नगरी की राह,
बार-बार छिन जाने पर भी
मिटी नहीं थी धन की चाह।

पहले गया गुप्तधन के घर
जो था बहुत कृपण धनवान,
घर आये अभ्यागत का भी
कभी नहीं करता सम्मान।

बेमन से ही मिली रोटियाँ
सुने बोल कड़वे दो-चार,
इस प्रकार वह रात सोमिलक
ने काटी होकर लाचार।

और दूसरे दिन ही जब वह
गया उपभुक्तधन के द्वार,
किया बहुत ही गृहस्वामी ने
उसका आदर औ' सत्कार।

सोमिलक ने सोचा तब यह
धन का आखिर क्या उपयोग,
व्यर्थ गुप्तधन का धन सारा
जिसको रहा न कोई भोग।

उपभुक्तधन जैसे ही धन का
माँगा फिर उसने वरदान,
'तथास्तु' कह कर्मदेव ने
बना दिया वैसा धनवान।"

कथा सुन यह कछुआ बोला—
"मित्र हिरण्यक, कर मत शोक,
गड़े हुए धन से बनता क्या
कभी लोक ही या परलोक?"

कौए ने भी कहा—"हिरण्यक,
वही जगत में सच्चा मीत,
हित की बातें कहे अरुचिकर
और रखे मन में अति प्रीत।"

इसी बीच चित्रांग नाम का
आया हिरण बहुत भयभीत,
मंथरक ने कहा उसे यह—
"ज्ञात मुझे क्यों तुम भयभीत;

श्री "भारतीभक्त"

निकला वन से चित्रांग तभी
बना उसी दिन उनका मित्र,
नित्य बैठकर तरु-छाया में
बातें करते चारों मित्र।

एक दिवस चित्रांग न आया
हुए मित्र सब चिंतालीन,
लघुपतनक ने जाकर देखा
फँसा जाल में था वह दीन।

बोल उठा आँखों में आँसू
भरकर वह बेबस चित्रांग—
"मित्र, मौत आ पहुँची सिर पर
जकड़े हैं मेरे सर्वांग।

अंत समय में मिले मित्र तुम
अब यह अंतिम तुम्हें प्रणाम,
मित्र मंथरक और हिरण्यक
से भी मेरा कहो प्रणाम।"

लघुपतनक ने तब कहा—"मित्र,
क्यों तुम होते हो यों त्रस्त,
अभी हिरण्यक आयेगा औ'
देगा बन्धन काट समस्त।"

इतना कह वह ले आया झट
हिरण्यगर्भ को पवन समान,
जिसने काट दिये सब बंधन
बचे हिरण के यों अब प्राण।

घुसो घने जंगल में जाकर
बच ही जायेंगे अब प्राण,
नहीं शिकारी लख पायेगा
छोड़ न पायेगा वह बाण।"

किया हिरण ने वैसा ही औ'
छिपा घने जंगल के बीच,
औझल उसको पा आँखों से
फिरा शिकारी भी वह नीच।

उसके वापस जाते ही यों
बोला लघुपतनक तत्काल,—
"आओ अब चित्रांग यहाँ तुम
वापस गया तुम्हारा काल।"

इसी समय दुख से विह्वल हो
आ पहुँचा मंथरक वहाँ,
और दूसरी ओर शिकारी
भी आ धमका तुरत वहाँ।

लघुपतनक उड़ गया पेड़ पर
चूहे ने ली बिल की राह,
मुक्त हिरण भी भागा तत्क्षण
बचा एक कछुआ ही आह।

देख हिरण को मुक्त जाल से
हुआ शिकारी बहुत निराश,
लेकिन उस कछुए को लखकर
बँधी ज़रा-सी मन में आस।

बाँध उसे झट, किया वहाँ से
जब उसने घर को प्रस्थान,
मित्रशोक से हुए विकल तब
तीनों ही मित्रों के प्राण।

आखिर तीनों ने ही मिलकर
की आपस में एक सलाह,
हिरण मृतक-सा जा लेटा तब
जिधर गुज़रती थी वह राह।

कौआ उसपर बैठ चोंच से
धीरे करने लगा प्रहार,
समझा जिससे मूर्ख शिकारी
ने उसको 'यह मरा शिकार'।

कछुए को नीचे रखकर वह
जल्दी बढ़ा हिरण की ओर,
काट दिये चूहे ने आकर
कछुए के बंधन के डोर।

पास तलैया थी जिसके जल
में जा घुसा मंथरक शीघ्र,
उधर हिरण भी भागा उठकर
करके गति अपनी अति तीव्र।

कर मलता ही रहा शिकारी
बची सभी मित्रों की जान,
सच है, सच्ची मैत्री का ही
सुख जग में है श्रेष्ठ महान।

★ [मित्र-संप्राप्ति समाप्त] ★

चुड़ैल पत्नी

एक गाँव में एक गृहस्थ रहा करता था। उसकी पत्नी बड़ी चुड़ैल थी। क्योंकि पति जरा नरम स्वभाव का था, इसलिए वह और भी सख्त और कड़वी हो गई थी।

जब शादी हुई तो पति वे ही काम किया करता था, जो मर्द आम तौर पर करते हैं। पर जैसे जैसे समय गुजरता गया वैसे वैसे स्त्रियों के काम भी उसकी पत्नी उसे सौंपती गई। खेती के काम में मदद करना तो अलग, वह घर के काम भी उससे करवाने लगी। उसे ही गौवों को देखना पड़ता, बकरियों को खिलाना पिलाना होता। आखिर पानी भी वही लाने लगा। आँगन में झाड़ू देना, कपड़े धोना, चूल्हा जलाना, ये सब काम भी उसके मत्थे पड़े।

इतना सब करने पर भी, उसकी पत्नी उसे दिन भर जली कटी सुनाती रहती, जो कुछ वह करता और न करता उसमें गलतियाँ पकड़ती। मगर पति को उसकी बातें खड़े होकर सुनने तक फ़ुरसत न थी। जब वह काम पर इधर उधर दौड़ धूप कर रहा होता तो पत्नी एक जगह खड़े होकर, गला फाड़कर चिल्लाती—"तुम्हें एक काम भी नहीं आता जाता। कौन-सा काम पहिले करना चाहिये और कौन-सा बाद में, यह भी नहीं जानते। इतने अनाड़ी पति के साथ मैं भला कैसे गृहस्थी चलाऊँ!" उसकी आवाज मील दूरी पर भी सुनाई पड़ती।

यद्यपि पत्नी उसे इतना सता रही थी तो भी पति कुछ न कहता। वह पत्नी से रार न मोल लेना चाहता था। वह यह जानता था कि सब उसे देखकर हँसते थे।

एक दिन पत्नी ने पति से कहा—"दूध फट गया है! कब कौन-सा काम तुमने ठीक किया है!"

पति ने आश्चर्य से पूछा—"क्या दूध का फट जाना भी मेरी गल्ती है!"

"अगर तुमने दूध का बर्तन ठीक तरह धोया होता तो दूध क्यों फटता!" पत्नी ने पूछा।

"देखो, मुझे नहीं मालूम था कि दूध के बर्तन भी मुझे धोने थे, अभी तुम बता रही हो।" पति ने पूछा।

"मैं कितने काम देखूँ! जब तुम हो तो क्या तुम्हारी मदद की जरूरत मुझे न होगी!" पत्नी ने पूछा।

"वह सब मैं नहीं जानता हूँ। मुझे क्या क्या काम करने हैं, उन सब की एक सूची बनाकर मुझे दे। अगर मैं उनको न करूँ तब पूछ तलब करना। यह सिर्फ बातो बातों में तय होनेवाली बात नहीं है।" पति ने कहा।

वह कागज पर लिखने लगा और पत्नी उसके काम बताती गई। सूची बड़ी लम्बी हो गई।

थोड़े दिन गुजर गये। संक्रान्ति आई। कल त्यौहार था कि पत्नी ने घर के पासवाले पोखर में धोबी घाट खोल दिया। पति कपड़े धोकर, निचोड़ कर देता और वह उन्हें सुखा देती। जब तक यह काम जारी रहा वह पति को डांटती डपटती जाती थी। "कल त्यौहार है, अभी रोजमर्रे के काम ही नहीं हुये हैं, त्यौहार का काम भला क्या होगा! सूची लिख ली, पर क्या फायदा! एक काम भी नहीं होता। तुम जैसा निकम्मा कहीं नहीं है। माँ ने कहा ही था।"

अभी वह कह ही रही थी कि आफ़त आ गई। उसने पति के हाथ से कपड़ा लेने के लिये फिसलनदार पत्थर पर पैर रखा। पति को डाँटते डपटते उसका ख्याल न रहा। पैर उस पर पड़ना था कि वह फिसलकर पोखर में गिर गई।

"डूब रही हूँ, मर रही हूँ, मुझे जल्दी बाहर निकालो।" पत्नी ने कहा।

"डूबोगे नहीं, पोखर गहरा नहीं है। तुम्हारे गले तक ही पानी आयेगा।"

"ठंड के कारण सारा शरीर जम-सा रहा है। जल्दी मुझे बाहर निकालो।" पत्नी ने ठंड से काँपते हुए कहा।

"यह कैसे! सूची में अभी कई ऐसे काम हैं, जो मुझे करने हैं। यह काम सूची में नहीं है।" पति ने कहा।

"मुझे निकालते हो कि नहीं! बाप रे बाप, जोंक।" पत्नी चिल्लाई।

"लगता है, जो हमने आपस में इन्तजाम किया था, वह भूल गई हो, घर जाकर सूची लाऊँगा और तुम्हें सुनाऊँगा।"

पत्नी ठंड और जोंकों के भय से काँप रही थी। उसने काँपती हुई आवाज में कहा—"मर रही हूँ। उस सूची को फाड़कर फेंक दो, पहिले मुझे बाहर निकालो। तुम्हारा भला होगा।"

"इस तरह कहो। बिल्कुल ठीक। अब इस सूची से हमारा कोई सरोकार नहीं है। अब से तुम स्त्रियों का काम करो और मैं मर्दों का। मानती हो यह!" उसके पति ने पूछा।

पत्नी मान गई। पति उसको पोखर से निकालकर घर लाया। आग से उसकी सेक की। उसके बाद पत्नी ने पति को कभी बुरा-भला न कहा।

[१७]

[पद्मपाद ने पिंगल को वह गुफा दिखाई जहाँ रेगिस्तान के डाकुओं ने व्यापारियों को बाँध दिया था। हसनगौरी अपने सैनिकों को लेकर वहाँ गया और उसने उन्हें छुड़वाया फिर पिंगल के कहने पर पद्मपाद ने अपने जादू के बल से, बब्बर शेर और भेड़िये बनाये। उनसे डाकुओं को पकड़वा कर अपने पास बुलाया। उसके बाद—]

मौत के डर के मारे काँपते आते रेगिस्तान के डाकुओं को देखकर हसनगौरी ने विजयोल्लास में अट्टहास किया। उसने कभी कल्पना न की थी कि सालों से रेगिस्तान में यात्रियों को लूटकर जीवन निर्वाह करनेवाले डाकू इतनी आसानी से पकड़े जायेंगे। उसने सोचा कि नवाब अवश्य पद्मपाद को ईनाम देगा।

"पद्मपाद, आपकी शक्ति अतुलनीय है। इन दुष्टों को पकड़ने के लिए हम कई वर्षों से प्रयत्न कर रहे हैं। आज आपकी सहायता से हमारा प्रयत्न सफल हुआ है। अब से इस रेगिस्तान में, लोग सुरक्षित यात्रा कर सकेंगे। हम आपकी सहायता के लिए बहुत कृतज्ञ हैं।" हसनगौरी ने कहा।

पद्मपाद ने मुस्कराते हुए कहा—"हसन! जो कुछ सहायता मैं कर सकता

था, मैंने की। अब इन डाकुओं की सुनवाई कर उनको सजा देना तुम्हारा काम है। मैं अपने बब्बर शेर और भेड़ियों को वापिस बुला रहा हूँ।" यह कहकर पद्मपाद ने हाथ ऊपर उठाकर कोई मन्त्र पढ़ा। तुरत बब्बर शेर और भेड़िये अदृश्य हो गये। पद्मपाद ने अपनी हथेली में आये हुए पत्थरों को हसनगौरी और पिंगल को दिखाकर कहा—"ये हैं भेड़िये और बब्बर शेर।" उसने उन्हें दूर फेंक दिया।

हसनगौरी के हुक्म देते ही उसके सैनिकों ने डाकुओं के सरदार "गिद्ध" को हथकड़ी लगादी। उसके साथियों को एक रस्सी में बांध दिया। इस बीच पद्मपाद ने पिंगल को अलग ले जाकर कहा—"पिंगल! क्या तुम तुरत अवन्तीनगर जाने की सोच रहे हो?"

"हां, पद्मपाद! मेरे दुष्ट भाई, मुझे जहाज के कमान को बेचने के बाद मेरी मां को तरह तरह से सता रहे होंगे। पहिले भी उन्होंने ऐसा ही किया था। उनको जान देनेवाली मां पर ही प्रेम नहीं है।" पिंगल ने कहा।

"इन सब कष्टों का कारण तेरा भल्लूकेतु को बुलाने का मन्त्र भूल जाना ही है।

मैं यह मन्त्र फिर बताता हूँ, उसे याद रखो। भूलना नहीं।" कहकर पद्मपाद ने पिंगल को वह मन्त्र फिर बताया। अपने हाथ की छोटी अंगुली की अंगूठी निकालकर उसे देते हुए कहा—"यह लो, इस अंगूठी को सावधानी से रखो। अगर कभी तुम मुझे देखना चाहो तो मन में मेरा ख्याल करके अंगूठी देखना और मैं तुरत तुम्हारे पास आ जाऊँगा।"

"पद्मपाद! मैं तुम्हारी सहायता कभी न भूलूँगा। तुम्हारी मदद के कारण ही मैं फिर अपनी माँ को देख पा रहा हूँ। क्या तुम भी मेरे साथ अवन्तीनगर आ सकोगे? तुम्हें देखकर मेरी माँ खुश होगी।" पिंगल ने कहा।

पद्मपाद ने पिंगल से कहा—"पिंगल! जो तुमने मेरी सहायता की है, मैं उसे कैसे भूल सकता हूँ! तुम्हारी सहायता के कारण ही मैं महामायावी को जीत पाया था। इसलिए, एक दिन, तुम्हारे घर अतिथि बनकर आऊँगा और तुम्हारी माँ के दर्शन भी करूँगा। खैर, अब मुझे इन व्यापारियोंको छोड़कर अकेले ही तीर्थों को देखने जाना होगा। अब

जाऊँगा।" उसने कहा ही था कि वह अदृश्य हो गया।

पिंगल ने हसनगौरी के पास जाकर कहा कि वह अपने देश वापिस जा रहा है। यह सुनते ही हसनगौरी ने आश्चर्यपूर्वक पूछा—"पिंगल! यह क्या कह रहे हो? तुम तो इस तरह कह रहे हो, जैसे तुम्हारा घर कहीं आसपास ही हो। तुम्हारा देश, जानते हो, यहाँ से कितने हजार मील दूर है?"

पिंगल ने मुस्कराकर कहा—"हसन! तुम मेरी शक्ति के बारे में नहीं जानते। अगर तुम मेरे साथ उस पीपल के पेड़ के नीचे आये तो तुम्हें एक अजीब व्यक्ति दिखाऊँगा। सैनिकों और डाकुओं का उसको देखना अच्छा नहीं।" कहकर वह बड़े पत्थर की आड़ में चला गया।

पिंगल के मनमें मन्त्र जपते ही, भल्लूककेतु उसके सामने प्रत्यक्ष हुआ। "स्वामी! क्या आज्ञा है? आप इस गुलाम को भूल गये थे क्या?" उसने पूछा।

भल्लूककेतु के भयंकर आकार को देखते ही हसनगौरी ने जोर से चिल्लाकर वहाँ से भागना चाहा। पिंगल ने उसे रोकते हुए कहा—"हसन! तुम न घबराओ। यह भल्लूककेतु मेरा सेवक है।"

"यह राक्षस तुम्हारा सेवक है?" हसनगौरी को और भी आश्चर्य हुआ।

"हाँ!" कहता पिंगल भल्लूककेतु के कन्धे पर चढ़ बैठा। उसने हसन से कहा—"हसन! अब मैं अपने देश वापिस जा रहा हूँ। मुझे मरने से तुमने बचाया। मैं इसके लिए हमेशा कृतज्ञ रहूँगा।" फिर उसने भल्लूककेतु से कहा—"अब मुझे अवन्तीनगर मेरे घर ले जाओ।"

भल्लूकंकेतु ने जोर से हुंकार किया। वह आकाश में उड़ चला। समुद्र, नदी, पहाड़ पार करके वह पिंगल को सूर्योदय के समय तक अवन्तीनगर के समीप उसके घर के पास ले गया।

घर की हालत ऐसी थी कि उसे देखते ही वह मूर्छित-सा हो गया। वह यह भी जान गया कि उसके भाइयों ने माँ को बहुत सताया होगा। वह घर के दरवाजे के पास पहुँचा था कि उसे अपनी दुबली-पतली, कमजोर माता दिखाई दी। उफनते दुःख को रोककर, पिंगल भागा-भागा गया और उसने माँ को "माँ" कहकर गले लगा लिया।

माँ, कुछ देर तक हैरान रही, फिर अपने लड़के को पहिचानकर उसने कहा—"क्यों बेटा, पिंगल! जीते हो! कितनी किस्मत वाली हूँ।" वह रोने लगी। पिंगल ने माँ को सान्त्वना देते हुए कहा—"माँ, अब हमारे घबराने की कोई जरूरत नहीं। मेरे दुष्ट भाई कहाँ हैं?"

"बेटा, तुझे धोखा दिया था उन्होंने, इसलिए वे उसकी सजा भुगत रहे हैं। उन दोनों को राजा ने कैद में डाल रखा है।" माँ ने कहा।

"अगर यह बात है तो क्यों तू इस हालत में है? जो धन और जादूवाली थैली छोड़ गया था, वे हैं न?" पिंगल ने पूछा।

माँ ने अपने दुःख को जब्त करते हुए कहा—"बेटा! उनके कारण ही राजा ने उन्हें जेल में डाल दिया है।" उसने इसके बाद पिंगल के जहाज के कप्तान के गुलाम के रूप में बिकने के बाद, जो कुछ गुजरा था, कह सुनाया।

माँ के सब कुछ सुनाने के बाद पिंगल गुस्से से काँपने लगा—"माँ, मैं इस अवन्तीनगर के राजा से बदला लेकर

रहूँगा।" उसने कहा। फिर उसने मल्लूककेतु को बुलाया। "स्वामी! क्या आज्ञा है?" पूछता मल्लूककेतु प्रत्यक्ष हुआ।

"मल्लूक! अवन्तीनगर के राजा ने मेरे दोनों भाइयों को कैद में डाल दिया है। उनको तुरत यहाँ लाना है। यही नहीं, उसके खजाने का सारा धन भी लाओ। जादू की थैली भी उसके पास है। उसे भी लाओ।"

"अच्छा, हुजूर।" कहकर मल्लूककेतु अदृश्य हो गया। पाताल में से होता हुआ, वह राजमहल में गया। खजाने का सब धन लेकर जादू की थैली लेकर वह जेल में गया।

मल्लूककेतु को देखते ही पिंगल के भाई, जीवदत्त और लक्षदत्त चिल्लाये, और मूर्छित हो गये। मल्लूककेतु ने उन दोनों को कन्धे पर डाल लिया और पिंगल के पास आकर कहा—"स्वामी! यह लीजिये जादू की थैली! इस गठुर में, राजा के खजाने का सारा धन है। ये आपके भाई हैं।"

मूर्छित पुत्रों को देखकर माँ का वात्सल्य जाग उठा। वह उनके दिये हुए कष्ट भूल गई। उसने उनके मुँह पर पानी छिड़ककर—"बेटो-बेटो" प्रेम से पुकारा। जीवदत्त और लक्षदत्त ने आँखें खोलीं। जब सामने उन्हें पिंगल दिखाई दिया तो उनके प्राण ऊपर के ऊपर रह गये और नीचे के नीचे, उन दोनों ने पछताते हुए कहा—"माँ, पिंगल! हमें क्षमा करो। हमें अक्ल आ गई है। हमने अपने पापों का प्रायश्चित्त उन काली कोठरियों में कर लिया है।"

यह सुनकर पिंगल को भी उनपर दया आई। फिर भी उसने उनको गुस्से की

नज़र से देखकर कहा—"तुम दोनों से बड़ा नीच धोखेबाज़ इस संसार में कोई न होगा। अगर चाहूँ तो तुम दोनों को अभी भल्लूककेतु द्वारा पाताल में गड़वा सकता हूँ। परन्तु चूँकि बड़े भाई हो, इसलिए इस बार भी छोड़ देता हूँ। अगर तुमने फिर कभी मेरा या माँ का बुरा सोचा तो बोटी बोटी कटवा दूँगा।"

"भाई क्षमा करो। हमें अक्ल आ गई है।" जीवदत्त और रक्षदत्त ने एक स्वर में कहा।

पिंगल ने जादू की थैली माँ को देते हुए कहा—"माँ, तुरत भोजन का प्रबन्ध करो।"

फिर उसने भल्लूककेतु को बुलाकर कहा—"भल्लूक! नदी के किनारे जो पेड़ों का झुरमुट दिखाई दे रहा है, वहाँ रात-भर रहो और सवेरे होते ही, मेरे लिए वहाँ एक महल तैयार करो। यह हर दृष्टि से अवन्तीनगर के राजा के महल से अच्छा होना चाहिये। समझे।"

"अच्छा हुज़ूर, भल्लूकपर्वत पर रहनेवाले मेरे बन्धु-बान्धव, नौकर-चाकरों में बड़े-बड़े कारीगर हैं। मैं बुलाऊँ तो वे तुरत चले आयेंगे। क्या अभी काम शुरू कर दें?" भल्लूककेतु ने पूछा।

"दिन के समय, तुम राक्षसों का यहाँ आना खतरनाक है। तुम्हें देखने के बाद यहाँ चिड़ियायें भी रहने में घबरायेंगी। लोगों का नगर छोड़कर भाग जाना मुझे पसन्द नहीं है। इसलिए सूर्यास्त के बाद ही अपना काम करो।" पिंगल ने कहा।

"अच्छा हुज़ूर! अभी मैं भल्लूकपर्वत जाता हूँ। मैं जाकर अपने आदमियों को यह बताऊँगा और अन्धेरा होने के बाद काम शुरु हो जायेगा।" भल्लूककेतु यह कहकर अदृश्य हो गया। (अगले अंक में समाप्त)

वह मुक्ति, जो न मिल सकी!

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया। शव को उतार कर, कन्धे पर डाल वह श्मशान की ओर चुपचाप चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, यह सोचना अच्छा है कि जो तुम कर रहे हो वह ठीक है कि नहीं, क्योंकि भले ही कितनी ही लम्बी आयु हो, अच्छे काम करने के लिए समय काफी नहीं होता। उनको तुरत कर देना चाहिए। किसी जमाने में रत्नपाल नाम के राजा ने पचास साल राज्य किया और एक भी अच्छा काम न किया। मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ, सुन।" उसने यह कहानी सुनानी शुरू की :

रत्नपाल अल्कापुरी का राजा था। वह हमेशा इहलौकिक वस्तुओं में डूबा रहता,

बेताल कथाएँ

उसे परलोक की चिन्ता ही न थी। भक्तों को, पूजा-पाठ करनेवालों को देखता तो वह खिझता। शिकार, जुआ, संगीत, नृत्य आदि व्यसनों में उसको अधिक दिलचस्पी थी।

शिवरात्री आई। उस दिन सब व्रत रखते हैं। रतजगा करते हैं। शिवालयों में शिव की पूजा व अभिषेक किया जाता है। ये सब चीज़ें राजा को बिल्कुल पसन्द न थीं। इसलिए शिवरात्री के दिन, सवेरा होने से पहिले ही घोड़े पर सवार हो, अपने नौकर चाकरों को लेकर वह शिकार के लिए जंगल में निकल जाता।

राजा के नौकर चाकरों में कई को उस दिन शिकार पर जाना पसन्द न था, किन्तु वे राजा का विरोध न कर पाते थे। वे जंगल में घुसे थे कि इतना अंधेरा हो गया कि हाथ को हाथ न दिखाई देता था क्योंकि आकाश में काले मेघ छा गये थे। थोड़ी देर में बिजली कौंधने लगी, गरजने लगी। भयंकर आँधी आने लगी। पेड़ झूमने लगे।

नौकर चाकरों को डर लगने लगा—"आज का दिन पवित्र है और हम शिकार खेलने निकले है, इसलिए भगवान हमें

दंड देंगे।" सोचकर, एक एक करके, राजा को छोड़कर सबने घर का रास्ता पकड़ा।

राजा ने दूरी पर एक हरिण देखा। जोश में अपना घोड़ा उस ओर भगाने लगा। हरिण कहीं गायब हो गया। हवा के साथ रिमझिम होने लगी। जंगल में कहीं कहीं बिजलियाँ भी गिर रही थीं। राजा से कुछ दूर, एक ऊँचे पेड़ पर बिजली गिरी और उसके दो टुकड़े हो गये।

बिजली गिरते ही राजा का घोड़ा बिदक गया और इधर उधर भागने लगा। राजा उसको रोक न सका। घोड़ा भागता गया। रात में, बहुत देर बाद, एक मन्दिर के पास खड़ा हो गया। उस मन्दिर के चारों ओर पेड़ थे। राजा ने एक पेड़ से अपना घोड़ा बाँध दिया। मंडप में जाकर एक खम्भे के सहारे बैठ मन्दिर की ओर देखने लगा। पहिले तो उसने मन्दिर में जाना चाहा पर यह सन्देह कर कि भगवान क्रुद्ध होंगे, वह न गया।

"भगवान पहिले से ही मुझपर क्रुद्ध हैं। आज शिकार पर जाना मेरी गल्ती है। इसलिए भगवान बिजलियाँ बरसा

रहे हैं। आज मुझसे व्रत करवाया। अब रतजगा भी करवायेंगे।" राजा ने सोचा।

राजा बहुत भीग गया था और आँधी चल रही थी। वर्षा हो रही थी, अगर वह चाहता तो भी न सो सकता था। उस उजड़े मन्दिर में खम्भे के सहारे बैठे राजा को एक विचित्र दृश्य दिखाई दिया।

आधी रात के समय मन्दिर का दरवाज़ा खुला, कोई पुजारी-सा व्यक्ति बाहर निकला। इधर उधर देखकर वह अन्दर चला गया और फिर से दरवाज़ा बन्द कर दिया। इस निर्जन वन में और उजड़े मन्दिर में इस पुजारी का क्या काम! शायद उसी ने वहाँ दिये जलाये हुए थे। थोड़ी देर बाद, पुजारी फिर बाहर आया। जब वहाँ किसी को उसने न देखा तो लम्बी साँस छोड़कर अन्दर चला गया।

इस बार राजा ने पुजारी को गौर से देखा। राजा को शक हुआ कि पुजारी शायद आदमी न था। भूत था। "कोई पुजारी मरकर भी इस उजड़े हुए मन्दिर में भी भगवान की पूजा कर रहा है। कितना पुण्यात्मा है! मैंने कभी भगवान को भूलकर भी याद न किया। अब मुझे भी अपना जीवन भगवान को अर्पित कर देना चाहिए।" राजा ने सोचा।

जब तीसरी बार पुजारी बाहर आया तो राजा ने मंडप से उठकर पुजारी के पास जाकर पूछा—"स्वामी, आप कौन हैं? आप यहाँ कब से रह रहे हैं?"

राजा को देखते ही पुजारी बहुत खुश हुआ—"मैं सोच रहा था कि कोई नहीं आया। आओ, अन्दर आओ। मैं सौ सालों से इस मन्दिर का पुजारी हूँ। मैं सोचता था कि कम से कम शिवरात्री के

दिन तो भक्त आयेंगे। कितने ही सालों बाद तुम आये हो! ईश्वर का अभिषेक करवाओगे?" पुजारी ने धीमे धीमे राजा से पूछा।

"नहीं, मैं पापी हूँ। इस हालत में मेरा मन्दिर में आना उचित नहीं। फिर भी ईश्वर का ध्यान करके मैं इस भवसागर को पार करना चाहता हूँ। अगर आपको मालूम हो तो मुझे एक बात बता सकेंगे?" राजा ने पूछा।

"अगर मुझे मालूम होगा तो जरूर बताऊँगा।" पुजारी ने कहा।

"मैं कितने साल और जिऊँगा? कब चला जाऊँगा?" राजा ने पूछा।

"तुम पचास साल और जिओगे। और शिवरात्री के पुण्य पर्व पर, आधी रात को शरीर छोड़ दोगे।" पुजारी ने कहा।

राजा बड़ा खुश हुआ। उसने पुजारी से विदा ली। मंडप में वापिस जाकर वहीं सवेरे होने तक सोता रहा। फिर अपने शहर लौट गया।

उसने घर जाकर सोचा—"मेरी आयु अभी पचास साल और है। इसी तरह

मौज करूँगा, उसके बाद पच्चीस साल तक, निश्चल बुद्धि से भगवान का ध्यान करूँगा।"

यह निश्चय करने के बाद विनोद विलास में वह पहिले की अपेक्षा और अधिक डूब गया। पच्चीस वर्ष एक घड़ी की तरह गुज़र गये। यह पता लगते ही राजा को आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा। "देखते देखते ही पच्चीस वर्ष गुज़र गये। फिर भी मुझे संसारिक सुखों से विरक्ति नहीं हुई। अगले पच्चीस वर्षों में भी मैं एकाग्र चित्त से भगवान का ध्यान न कर सकूँगा। इसलिये पन्द्रह वर्ष और इसी तरह जीवन व्यतीत

करूँगा। और अगले दस वर्ष भगवद् ध्यान में बिता कर मोक्ष प्राप्त करूँगा।"

पन्द्रह वर्ष भी यूँहि गुज़र गये। राजा को संसार से विरक्ति नहीं हुई। "एकाग्र होकर क्या तीन वर्ष भगवान का ध्यान करना काफ़ी नहीं है!" उसने सोचा।

जब केवल तीन साल बाकी रह गये तो उसने सोचा—"क्या एक साल काफ़ी नहीं होगा?" वर्ष बीत गया। छः महीनों के तीन महीने रह गये। तीन महीनों में केवल तीन दिन रह गये।

राजा को चिन्ता हुई। फिर भी उसका मन भगवान के प्रति प्रवृत्त नहीं हुआ—"मेरे जीवन के अभी तीन दिन ही बाकी रह गये हैं। परन्तु इन तीन दिनों में एकाग्र चित्त हो मैं भगवान का ध्यान नहीं कर सकता।—अगर स्वच्छ मन से भगवान का ध्यान तीन घड़ी भी किया जाय तो मुक्ति मिल सकती है न! मैं अपने जीवन के आखिरी दिन शिवरात्री की रात को ईश्वर के ध्यान में बिता दूँगा। उससे मेरे सारे पाप धुल जायेंगे।" राजा ने सोचा।

राजा के जीवन का आखिरी दिन आया। पर तब भी उसको विरक्ति न हुई। "अगर किसी चीज़ का आनन्द लेना है तो इस जीवन में अब एक ही दिन रह गया है। सूर्यास्त होने से पहिले जिस किसी चीज़ का मैं आनन्द लेना चाहता हूँ उसे लेकर, उसके बाद ईश्वर का ध्यान शुरु करूँगा।" उसने सोचा।

उसने वही किया, सूर्यास्त हो गया। राजा ने चिन्तित हो, मन्त्री को बुलाकर कहा—"मन्त्री! भगवान का कीर्तन करने वालों को बुलाओ। अब मेरा समय समाप्त हो गया है। आज आधी रात को मेरा जीवन खतम हो जायेगा। अब भगवान का नाम स्मरण करने से मैं शरीर छोड़कर कैलाश पहुँचूँगा।"

"महाराज! आप क्या कह रहे हैं? आप अभी सौ साल और जियेंगे।" मन्त्री ने कहा।

"नहीं, मैं अपनी मृत्यु के बारे में अच्छी तरह जानता हूँ। इसलिये इधर उधर की बातें न करो और तुरत कीर्तन करनेवालों को बुलाओ।" राजा ने कहा।

परन्तु कीर्तन करनेवालों के आने के पहिले ही राजा मूर्छित-सा हो गिर गया।

उस मूर्छा से वह न उठ सका। ठीक आधी रात के समय वह मर गया।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा मुझे एक सन्देह है। पचास साल का समय होने पर भी रत्नपाल भगवान के प्रति अपना मन क्यों नहीं लगा पाया? क्या इसलिये कि उसे भगवान के ध्यान पर विश्वास न था? या भाग्य अनुकूल न था। अगर जान बूझकर इसका उत्तर न दिया तो तेरा सिर फूट जायेगा।

विक्रमार्क ने कहा। "यह जरूर सच है कि रत्नपाल भगवान का ध्यान करके, अपने पापों से मुक्त होकर मोक्ष पाना चाहता था। परन्तु उसकी इच्छा यदि पूरी न हुई तो उसका कारण भी वही था। क्योंकि यद्यपि उसको मोक्ष के सुखों से आसक्ति थी पर वह इहलौकिक सुखों से विरक्त न हो सका था। इन दोनों इच्छाओं के लिए एक जगह स्थान नहीं है, यह वह न जान सका। उसका यह गलत ख्याल रहा कि सुखों का अनुभव करके वह उनसे ऊब बैठेगा। इहलौकिक सुखों का जितना हम अनुभव करते हैं उतना ही हम उनके आधीन होते जाते हैं। यह बात सच है कि एकाग्र चित्त से किया गया एक घड़ी का ध्यान भी काफ़ी है पर उस एकाग्र चित्त को पाने के लिए कई साल लग जाते हैं। रत्नपाल ने इस दिशा में कोई प्रयत्न न किया। यही उसकी गल्ती थी। उसके लिए पचास वर्ष भी काफ़ी न थे। और भगवान का ध्यान किये बगैर ही वह मर गया।"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सभ्यता

एक भेड़िये ने सभ्यता से रहना चाहा। इसलिए उसने एक कुत्ते से दोस्ती की। भेड़िये ने देखा कि कुत्ता जो कोई रास्ते में दिखाई देता, उससे बातें करता।

वे दोनों मिलकर एक खुली हरी भरी जगह पर पहुँचे। वहाँ उन्हें एक मेंढ़ा आता दिखाई दिया। भेड़िये को भूख लग रही थी। उसने कुत्ते की ओर मुड़कर पूछा—"क्यों कुत्ते उस मेंढ़े का क्या किया जाय?"

"जो तुम चाहो करो!" कुत्ते ने कहा। भेड़िये ने मेंढ़े के पास जाकर कहा—"तुम जमीन पर लेट जाओ।"

"क्यों?" मेंढ़े ने पूछा।

"तुम्हें मारकर खाऊँगा!" भेड़िये ने कहा।

"तुम्हें इतनी तकलीफ़ की क्या जरूरत है! मुख खोलकर खड़े हो जाओ, मैं भागा भागा आऊँगा और तुम्हारे मुख में घुस जाऊँगा।" कहकर मेंढ़ा पीछे हटा और जोर से भागा भागा आया, भेड़िये के पेट से जा टकराया।

उस चोट से भेड़िया बेहोश हो गया। जब होश आया तो सभ्यता को नमस्ते कर वह जंगल में चला गया।

अद्भुत दीप

[९]

[अद्भुत दीप की सहायता से राजकुमारी से विवाह करके, वह अद्भुत महल में रह रहा था कि अलादीन पर आफ़त आ पड़ी। जब वह शिकार खेलने गया हुआ था तब मोरोका का जादूगर आया। उसने अलादीन की पत्नी को नया दीप देकर, अद्भुत दीप ले लिया और उसकी सहायता से उसके महल को और राजकुमारी को अपने देश ले गया। राजा को गुस्सा आ गया। उसने अलादीन से कहा कि यदि वह चालीस दिन में उसकी लड़की नहीं लायेगा तो उसका सिर काट दिया जायेगा। अलादीन नगर छोड़कर चला गया।]

जाते जाते रास्ते में एक नदी आई। उसको देखते ही अलादीन ने आत्म-हत्या करके अपने कष्ट खतम करने चाहे— क्योंकि वह यह न जानता था कि उसकी पत्नी कहाँ थी और उसे कैसे खोजे!

परन्तु तुरत वह अपनी गल्ती समझ गया। भगवान द्वारा निर्णीत भाग्य को धिक्कारने का अधिकार उसे न था।" उसने सोचा। उसे यह भी ख्याल आया कि आत्म-हत्या महापाप है। यह सोचते ही उसका भारी दिल कुछ हल्का हुआ।

अलादीन ने आत्म-हत्या का ख्याल छोड़ दिया। उसने नदी में उतरकर स्नान किया। पानी से हाथ रगड़े। उसके

अनजाने ही हाथ की अंगूठी के रगड़ते ही अंगूठी का भयंकर आकारवाला भूत उसके सामने प्रत्यक्ष हुआ। उसने पूछा—"क्या आज्ञा है!"

अलादीन को पहिले तो अचरज हुआ। फिर सम्भलकर, खुशी खुशी उसने कहा—"मेरा महल और उसमें रहनेवाली मेरी पत्नी को वापिस लाओ।"

"दीप के भूत का तिरस्कार करना मेरे बस की बात नहीं है। मालिक! मुझसे यह काम न हो सकेगा।" अंगूठी के भूत ने कहा।

"यह बात है तो कम से कम मुझे उस जगह तो ले जाओ, जहाँ मेरी पत्नी है।" अलादीन ने कहा।

अभी वह कह ही रहा था कि अंगूठी का भूत उसे मोरोका ले गया और उसको उसके महल के सामने खड़ा कर दिया।

ठीक उसी समय, जैसे किसी देवता ने प्रेरित किया हो, एक दासी ने खिड़की खोल राजकुमारी से कहा—"मालकिन! इस सायंकाल की धूप में बाग कितना सुन्दर लग रहा है!" दासी को तब अलादीन दिखाई दिया। वह ज़ोर से चिलाई—"मालकिन! वह देखो, मालिक आये हैं।"

राजकुमारी खिड़की के पास दौड़ी-दौड़ी आई। पति पत्नी को, एक दूसरे को देखकर आश्चर्य हुआ। राजकुमारी ने अपने आश्चर्य को बिना व्यक्त किये कहा—"जल्दी अन्दर आइये। कोई डर नहीं, जादूगर कहीं गया हुआ है।"

दासी ने जाकर एक खुफिया दरवाजा खोल दिया। अलादीन ने अन्दर आकर अपनी पत्नी का आलिंगन किया। दोनों ने थोड़ी देर तक आनंदाश्रु बहाये।

अलादीन ने अपनी पत्नी से कहा—"मैं जब शिकार खेलने गया था तो मैं कमरे में एक तांबे का दीप छोड़कर गया था। वह कहाँ है?"

"उसी के कारण तो हम पर यह आफ़त आ पड़ी है। परन्तु सारी गल्ती मेरी नहीं है। तब राजकुमारी ने सारी घटना सुनाई। यहाँ आने पर उस ठग ने बताया कि उस दीप में क्या शक्ति थी। उसने यह भी बताया कि उस दीप की शक्ति के कारण ही वह हमारा महल यहाँ ला सका था।"

"उसका तुझसे क्या काम?" अलादीन ने पूछा।

"रोज आकर वह मुझे मनाता है, ताकि मैं उसे चाहने लगूँ। इसलिए उसने मुझे बहुत-सी बातें बताईं। उसने बताया कि मेरे पिता ने तुम्हारा सिर कटवा दिया है, तुम्हारा पिता मुस्तफा एक दर्जी था। उसकी दया के कारण तुम इतने बड़े हुए थे। वह बहुत कुछ मना रहा है पर मुझपर कोई असर नहीं होता। इसलिए वह रोज मुँह लम्बा करके चला जाता है। परन्तु मुझे डर लग रहा है कि कहीं वह जबर्दस्ती न करे

और इस बीच खुदा की मेहरबानी से तुम आ गये।" राजकुमारी ने कहा।

अलादीन ने सिर हिलाकर पूछा—"क्या तुम जानती हो वह दीप कहाँ रखता है?"

"वह उसे कहीं नहीं रखता। कुड़ते के अन्दर रखकर घूमता फिरता है।" राजकुमारी ने कहा।

"बहुत अच्छा! मैं उसकी खबर लेता हूँ। तुम जरा अलग हो।" अलादीन ने कहा। उसके जाते ही अलादीन ने अंगूठी रगड़ी। अंगूठी के भूत ने प्रत्यक्ष होकर पूछा—"क्या आज्ञा?"

"क्या तुम कुछ विष वगैरह के बारे में भी जानते हो? अगर जानते हो तो ऐसा तेज विष लाओ जो हाथी को भी क्षण भर में गिरा सके।" अलादीन ने भूत से कहा।

भूत अदृश्य हो गया और थोड़ी देर में उसने अलादीन को एक पुड़िया लाकर दी।

भूत को भेजकर अलादीन ने अपनी पत्नी को बुलाया। उसके हाथ में पुड़िया दी और साफ़ साफ़ बता दिया कि जादूगर के आने पर वह क्या क्या करे। फिर वह एक अलमारी में छुप गया।

राजकुमारी को अलादीन का बताया हुआ काम बिल्कुल पसन्द न था। तो भी उसकी आज्ञा पर उसने अपनी दासी को बुलवाया। बाल ठीक करवाये। शृंगार किया। बढ़िया साड़ी पहिनकर गहने लगाये। गले में मोतियों का हार पहिना। हाथ-पैर पर भी गहने पहिने। इत्र लगाये। जादूगर की इन्तज़ार करती वह अपने गद्देदार बिस्तर पर लेट गई।

अपने समय पर जादूगर आया। उसके आते ही राजकुमारी ने मुस्कराते हुए उसकी अगवानी की। उसको बैठने के लिए कहा। आनन्द और आश्चर्य के साथ जादूगर एक आसन पर बैठ गया।

"शायद आपको आश्चर्य हो कि मैं कैसे बदल गई। परन्तु गुज़रे हुए पति के लिए कितने दिन यों रोऊं धोऊं? मैं आनन्द चाहती हूँ! मैंने कभी कष्ट नहीं झेले हैं। अगर दुखी भी होऊं तो क्या जो चले गये हैं वे वापिस आयेंगे? मेरी अक़्ल भी खूब है। बातें ही करती रही और आपकी आवभगत भी न की।" कहती वह एक तख़्त के पास गई। जादूगर की ओर पीठ करके—उसने एक ग्लास में ज़हर डाल दिया और उसमें शरबत मिला दी—और दासी से वह जादूगर को दिलवाया।

"तुम्हारी मुस्कराहट की मिठास के मुकाबले में यह शरबत किस काम का है!" कहकर जादूगर ने शरबत पी और फौरन पेड़ के ठूँठ की तरह कालीन पर चारों खाने चित्त गिर पड़ा।

जादूगर के गिरने का शब्द सुनते ही अलादीन अल्मारी में से बाहर निकला। यह पता लगाकर कि जादूगर मर गया है। उसने उसके कुरते में से अद्भुत दीप को

बाहर निकला। फिर उसने अपनी पत्नी को अलग भेजा। दीप को रगड़कर दीप के भूत को बुलाया। "इस महल को जैसा यह है वैसा ही इसकी जगह ले जाओ।" अलादीन ने भूत से कहा।

तुरत अलादीन का महल अपनी जगह पहुँच गया। अलादीन ने राजकुमारी को बुलाकर कहा—"अब हम फिर अपने घर आ गये हैं। परन्तु इस समय, रात में पिताजी से मिलना अच्छा नहीं, कल मिलेंगे।"

जबसे वे दोनों अलग हुए थे तबसे पति-पत्नी ने खाना-सोना छोड़ रखा था। परन्तु तब वे आराम से खा-पीकर सो गये।

अगले दिन सवेरा हुआ। सवेरा होते ही अपनी लड़की के बारे में राजा को रोने की आदत हो गई थी। उसने खिड़की से बाहर जो देखा तो अलादीन के महल को अपनी जगह पाया।

वह सन्तोष से पागल-सा हो गया। वह भागा-भागा अलादीन के महल में गया। छूकर देखा। वह भ्रम न था। वह सीढ़ियों पर भागता अलादीन और अपनी लड़की के कमरे में गया। प्रेम से अपनी लड़की का आलिंगन किया और आनन्द के मारे रोने लगा।

"बेटी! मैंने न सोचा था कि मैं फिर तुम्हें देख सकूँगा। तुमने बड़ी मुसीबतें झेली होंगी। तुम तो मुझसे बिछुड़कर एक क्षण भी न रह पाते थे, बताओ, क्या हुआ था?" उसने अपनी लड़की से पूछा।

राजकुमारी ने सब बताकर कहा—"गल्ती मेरी थी। जो चीज़ मेरी न थी, उसे दूसरे को मैंने क्यों दी?"

फिर अलादीन ने जादूगर का शव दिखाकर राजा से कहा—"यह है

मुसीबतों का जिम्मेवार ! यह हत्यारा जरूर नरक जायेगा।"

राजा जान गया कि अलादीन निर्दोष था। उसने उसको गले लगाकर कहा—"बेटा, तुम बुरा न मानना कि मैंने तुम्हारे साथ सख्ती बरती। मुझे अपनी लड़की पर बहुत प्रेम है। यह और कोई समझ सके या न समझ सके, तुम्हें जरूर समझना चाहिये। मैं उसके लिए राज्य का भी त्याग कर सकता हूँ।"

"आपकी कोई गल्ती नहीं है। मेरे कारण ही आपकी लड़की चली गई है, आपने सोचा होगा। यह एक तरह से सच भी है। क्योंकि मुझे पहिले ही जान लेना चाहिये था कि जादूगर की नजर अद्भुत दीप पर है और जैसे तैसे वह उसे हड़प लेगा। मुझे सावधान रहना चाहिये था। मैं अपना सारा किस्सा आपको बताता हूँ, तब ही आप इस जादूगर की दुष्टता समझ सकेंगे।" अलादीन ने कहा।

"पहिले इस दुष्ट की लाश दूर करो।" राजा ने कहा। अलादीन ने अपने सेवकों को बुलाकर कहा—"इस शव को जलाओ और राख को गन्दे नाले में फेंक दो।"

ये खबरें शहर में पहुँचीं। जनता को सन्तोष हुआ कि राजकुमारी सकुशल वापिस आ गई थी। जादूगर का दहन संस्कार देखने लोग झुँड बनाकर गये।

राजा ने घोषणा करदी कि नगर में खुशियाँ मनाई जायें। कैदियों को छोड़ दिया गया। गरीबों को दान दिया गया। दोनों महलों में आतिशबाजियाँ छोड़ी गईं।

अलादीन के कष्ट दूर हुए। वह अपनी पत्नी और बूढ़ी माँ के साथ सुख से रहने लगा। (अगले अंक में समाप्त)

आली नूर

(गतांक से आगे)

आनन्दोद्यान में पहुँच कर जब खलीफ़ा ने फाटक खुला देखा तो उसे आश्चर्य हुआ। इब्राहीम ने कभी भी ऐसी लापरवाही न की थी। जब वह महल के पास पहुँचा तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया। अन्दर कहीं भी प्रार्थना वगैरह, नहीं हो रही थी।

"अन्दर क्या हो रहा है....जरा चुप चाप देखूँ तो...." कहकर खलीफ़ा, जाफ़र की सहायता से एक पेड़ पर चढ़ा। खिड़की से अन्दर देखा। वहाँ एक सुन्दर युवती और युवक थे। इब्राहीम, उन दोनों के बीच, शराब का पात्र हाथ में लिये कह रहा था—"बेटी, जबतक तुम नहीं गाओगी तबतक हमारा आनन्द पूरा नहीं होगा।"

प्रियसखी को प्रेरित करने के लिए बूढ़े ने स्वयं एक गीत गाया। यह देख खलीफ़ा को बहुत गुस्सा आया। उसने पेड़ से उतरकर कहा—"बाग के माली के पोते का संस्कार कैसे शास्त्रोक्त रीति से हो रहा है, यह तुम भी देख लो।"

जाफ़र ने पेड़ पर चढ़कर तीनों को मौज करते देखा। वह उतरकर खलीफ़ा के पैरों पर पड़ गया।

"जाफ़र! मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया, देखें और क्या होता है, चलो पेड़ पर चढ़ो।" खलीफ़ा ने कहा।

इस बीच, प्रियसखी के लिए माली एक सितार लाया। सितार बजाते बजाते उसने एक गीत गाया। उसका गला बड़ा मीठा था। खलीफ़ा ने जाफ़र की ओर मुड़कर

आता था। पानी के साथ मछलियाँ भी आती थीं। इब्राहीम रोज उन्हें खाने को देता था। उन्हें पकड़ता न था। इसलिये वहाँ हजारों मछलियाँ थीं। नदी में जिन मछुओं को मछलियाँ नहीं मिलती थीं, वे कभी कभी इब्राहीम की आँख बचाकर बाग में घुस जाते और मछलियाँ चुरा ले जाते। उस दिन करीम नाम का मछुआ बाग का दरवाजा खुला देख अन्दर आया और खलीफ़ा द्वारा पकड़ लिया गया। खलीफ़ा ने उसे पहिचान करके कहा—"तू यहाँ क्या कर रहा है!"

करीम ने भी खलीफ़ा को पहिचान लिया। उसने कहा—"हुज़ूर माफ़ करें भूख के मारे चोरी कर रहा था। गरीब हूँ।"

खलीफ़ा ने हँसकर कहा—"अच्छा जाने दो! जाल फेंको, देखें तेरी किस्मत कैसी है।" करीम ने जाल फेंका। बहुत-सी मछलियाँ जाल में उसने ऊपर खींची।

"...तेरा भाग्य अच्छा मालूम होता है। तुम अपने कपड़े उतारकर मुझे दे दो।" खलीफ़ा ने कहा।

करीम ने बिना कुछ कहे अपने कपड़े उतार कर दे दिये। खलीफ़ा ने वे कपड़े

कहा—"जाफ़र, मैंने इतनी अच्छी आवाज कभी न सुनी।"

"तो इसका मतलब यह कि हुज़ूर का गुस्सा ठँडा हो गया है!" जाफ़र ने पूछा। खलीफ़ा ने कहा—"हाँ" दोनों पेड़ पर से उतर आये। फ़िर खलीफ़ा ने कहा। "अब मैं अन्दर जाकर जानना चाहता हूँ कि वे कौन हैं!" "अगर आप यकायक अन्दर गये तो वे घबरा जायेंगे। वेष बदलना होगा।" जाफ़र ने कहा।

उस समय जलाशय के पास कुछ आहट सुनाई दी। टिग्रिस नदी से उसमें पानी

पहिन लिये। टोकरे में कुछ मछलियाँ डाल लीं और जाकर महल का दरवाजा खटखटाया।

माली ने दरवाजा खोला। खलीफ़ा को उसने न पहिचाना। उसने पूछा—"करीम! तुम किस काम पर आये हो?"

"यह जानकर तुम्हारे यहाँ मेहमान आये हैं, मछलियाँ पकड़कर लाया हूँ।" खलीफ़ा ने कहा।

प्रियसखी उठकर आई। मछलियों को देखकर उसने कहा—"उन्हें तलकर ले आओ।"

खलीफ़ा मान गया। बाहर आकर उसने यह बात जाफ़र से कही। वे इब्राहीम के झोंपड़े में गये।

आग जलाकर, खलीफ़ा ने मछलियों के टुकड़े करके, उनको स्वयं तला। उसकी तली हुई मछलियाँ को, माली, अलीनूर, और इब्राहीम ने खाया।

अलीनूर ने खलीफ़ा के हाथ में तीन दीनारों को रखते हुये कहा—"तुमने, जो हमारा उपकार किया है, उसके बदले में ये लो।—एक जमाना था, जब मैं तुम्हारी गरीबी दूर कर सकता था। पर अब मजबूर हूँ इतना ही दे सकता हूँ।"
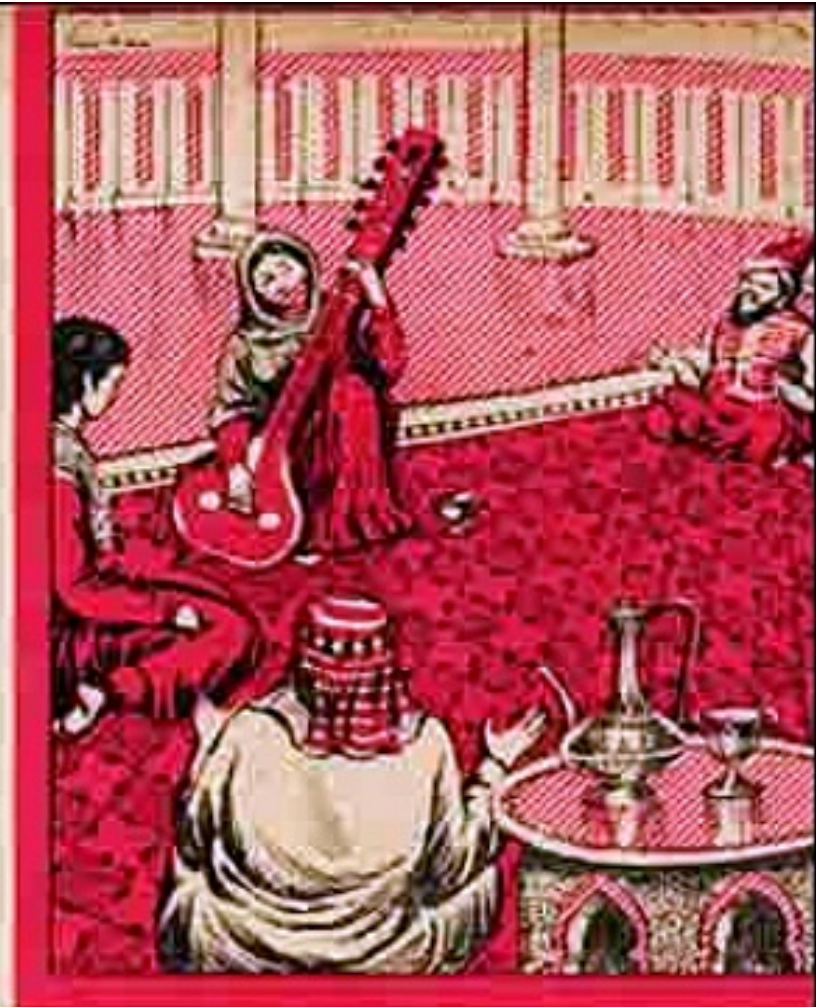
खलीफ़ा ने उन दीनारों को आँखो पर लगाकर टोकरी में रखते हुए कहा—"आपने जो दिया सो दिया। मैं इनका गाना सुनना चाहता हूँ। गाने पर तो मैं जान दे देता हूँ।" अलीनूर के कहने पर प्रियसखी ने एक बार और गाया। खलीफ़ा आनन्द में कहने लगा "वाह, वाह....क्या खूब, क्या खूब।"

यह देख अलीनूर ने कहा—"लगता है, यह तुम्हें जँच गई है। इसे तुम ही ले लो।" वह यह कह चला गया।

प्रियसखीने आँसू बहाते हुये पूछा। "अलीनूर मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो?

यह देख खलीफ़ा को आश्चर्य तो हुआ ही, दुःख भी हुआ। उसने अलीनूर से पूछा—"क्यों भाई, इस गुलाम को तुम किसी के यहाँ से उठा कर तो नहीं लाये हो?" अलीनूर ने उसको अपनी सारी कहानी सुनाई। सब सुनकर खलीफ़ा ने पूछा—"अब क्या करने जा रहे हो?"

"अल्लाह की दुनियाँ बहुत बड़ी है। कई रास्ते हैं।" अलीनूर ने कहा।

"मैं एक गरीब मछुआ हूँ। तुम्हारी मदद तो न कर सकूँगा....अगर तुमने जो मैं कहूँ सो किया तो तुम्हारे कष्ट खतम हो जायेंगे।" कहकर खलीफ़ा ने माली से कागज मंगवाया। और उस पर बसरा के सुल्तान के नाम यह चिट्ठी लिखी।

"बसरा के सुल्तान सुलेमान को खलीफ़ा हरून अल रशीद लिखते हैं कि यह चिट्ठी लानेवाला वज़ीर अलिफ़दल का लड़का अलीनूर है। यह चिट्ठी पढ़ते ही तुम गद्दी खाली कर दो और अपनी जगह अलीनूर को बिठाओ। इसमें किसी प्रकार की देरी न हो।" उस चिट्ठी पर खलीफ़ा ने अपनी सील लगादी। चिट्ठी को अलीनूर को देते हुए कहा—"इसे बसरा

के सुल्तान को दो। तुम्हारे सब कष्ट समाप्त जायेंगे।"

अलीनूर तभी वहाँ से चला गया। प्रियसखी रोने लगी। माली ने खलीफ़ा की ओर मुड़कर कहा—"देख, पापी तूने क्या किया है! इन दोनों को अलग अलग कर दिया है।—तीन पैसे की मछलियों के लिए तीन दीनारें पाकर तसल्ली जो कर लेते!"

खलीफ़ा की आँखें आग सी बरसाने लगीं। उसके ताली बजाते ही वज़ीर जाफ़र और मसूर अन्दर आये। जाफ़र ने खलीफ़ा के कपड़े उतार दिये और उनको उनके असली कपड़े पहिनाये। माली इब्राहीम की आँखें चिट्टी कौडी सी हो गईं। उसका नशा जाता रहा। वह खलीफ़ा के पैरों पर पड़ गया।

खलीफ़ा ने माली को क्षमा कर दिया। फिर प्रियसखी से कहा—"अब तुम्हें मालूम हो ही गया कि मैं कौन हूँ। जब तक तुम्हारे पति के यहाँ से खबर न आये तबतक हमारे घर में ठहरो।"

प्रियसखी खलीफ़ा के साथ राजमहल गई। वहाँ उसे एक कमरा, दासी वगैरह, दिये गये। खलीफ़ा ने उससे कहा कि

तुम्हारा पति बसरा का सुल्तान होने जा रहा है। तुम रानी बनोगी। इसलिये बेफिक्र रहो।" वह वहीं रहने लगी। थोड़े दिनों में अलीनूर बसरा पहुँचा। उसने सुल्तान के दर्शन किये और उसको खलीफ़ा की दी हुई चिट्ठी दे दी, सुल्तान ने खलीफा की सील देखकर, गौरव पूर्वक खड़े होकर, चिट्ठी को तीन बार आखों पर लगाकर, खोलकर पढ़ा। फिर उसने कहा—"खलीफ़ा का हुक्म, खुदा का हुक्म है।"

खलीफ़ा के हुक्म के मुताबिक अपनी गद्दी अलीनूर को देने के लिए सुल्तान ने शहर के काज़ी और अमीरों को बुलवाया। उस समय वहाँ वज़ीर सावी भी आया। सुल्तान ने, सावी को खलीफ़ा की चिट्ठी पढ़ने को दी। पत्र पढ़कर उसने चिट्ठी का वह भाग फाड़ दिया, जिस पर खलीफ़ा की सील थी।

"नीच! क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है? तुमने यह काम क्यों किया?" सुल्तान ने धमकाया।

"आप विश्वास न कीजिये कि यह दुष्ट खलीफ़ा से मिला है। यह मक्कार है। इसने स्वयं यह चिट्ठी लिखी है। अगर खलीफ़ा लिखना चाहते तो वे अपने कागज़ों पर अपने लेखकों से लिखवाते। उस पर राजकर्मचारियों की सीलें भी होतीं।

"तो तुम अब क्या करने के लिए कहते हो?" सुल्तान ने पूछा।

"इसे आप मुझे सौंप दीजिये। मैं सच मालूम कर लूँगा। मैं इसके साथ अपना एक कर्मचारी बगदाद भेजूँगा और वहाँ से विश्वसनीय पत्र मँगवाऊँगा। अगर इसने हमें धोखा दिया है तो इसको उचित दण्ड मैं स्वयं दूँगा।"

इसप्रकार सावी के कहने पर सुल्तान को विश्वास हो गया कि अलीनूर अपराधी था।

उसने अपने सिपाहियों से अलीनूर को खूब पिटवाया। वह जब बेहोश हो गया तो जेल के अधिकारियों को बुलवाकर उसे जेल में डाल दिया।

जेल के अधिकारी का नाम कुतेब था। वह अलीनूर को जेल में ले गया। और वहां उसने अलीनूर की हथकड़ियां खोल दीं। उसने कोठरी को स्वयं साफ़ कर बिछौना बिछोया। फिर अलीनूर से कहा—"हुजूर, मैं आपके पिता का बहुत एहसानमन्द हूँ। इसलिये आपको मेरी वजह से कोई हानि न होगी।

उसके बाद, चालीस दिन तक अलीनूर को जो कुछ सुविधायें दी जा सकती थीं, उसने वे सब दीं। और रोज जब वह सावी को रिपोर्ट भेजता तो लिखता कि कैदी को नाना प्रकार से सताया जा रहा था। अलीनूर के कैद में तीस दिन रहने के बाद, एक दिन जब खलीफ़ा, उसकी कोठरी के पास से जा रहा था, तो अन्दर से उसको किसी के रोने की आवाज सुनाई पड़ी। उसने नौकरों से रोनेवाली के बारे में पूछा। वे जाकर प्रियसखी को बुलाकर लाये। खलीफा उसको बिल्कुल भूल गया था। इसलिये प्रियसखी ने अपना सारा किस्सा सुनाकर कहा—"अलीनूर को गये हुये महीना हो गया है। अब तक उसके बारे में कुछ नहीं मालूम हुआ है।"
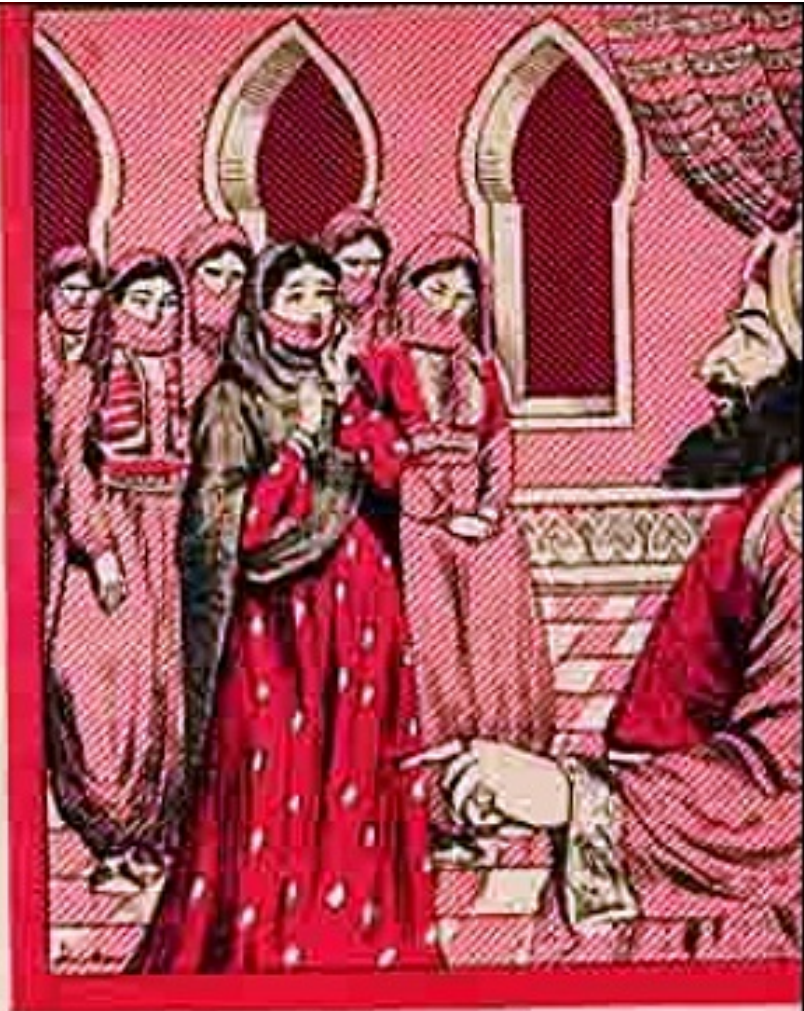
तब खलीफ़ा को सब कुछ याद हो आया। उसने एक नौकर द्वारा अलीनूर को एक बहुत अच्छा ईनाम भेजा। जब वह ईनाम बसरा पहुँचा तो अलीनूर कैद में इकतालीसवां दिन काट चुका था। सुल्तान यह न जान सका कि वह किसने किसको भेजा था। सावी से जब पूछा तो उसने कहा कि उसे भी न मालूम था।

परन्तु उसे सन्देह हुआ कि कहीं वह ईनाम सुल्तान के यहाँ से अलीनूर के नाम न आया हो। अगर यह ठीक था तो अलीनूर का जीवित रहना उसके लिए अच्छा न था। इसलिये सावी ने सुल्तान से कहा—"आपने आज्ञा दी थी न कि इस अलीनूर को मरवा दिया जाय?"

"मौके पर याद दिलाया। तुरत उसका सिर कटवादो।" सुल्तान ने कहा।

इस बीच, खलीफ़ा को सन्देह हुआ कि अलीनूर जीवित था कि नहीं। अगर वह जीवित होता तो तब तक उसके यहाँ से कोई न कोई खबर आ ही जाती। इसलिये उसने जाफ़र को बुलाकर कहा—"तुम कुछ सशस्त्र सैनिकों को लेकर बसरा जाओ। अगर अलीनूर बसरा का सुल्तान हो तो ठीक है। अगर किसी ने उसका अहित किया हो तो उसको पकड़कर लाओ। मैं उसका खून अपनी आँखों देखा चाहता हूँ।"

उसी दिन, जाफर कुछ सिपाहियों को लेकर बसरा के लिए रवाना हुआ। बसरा में अलीनूर को कैद से दरबार में लाया गया। यह जानकर कि अलीनूर का सिर

कटवाया जा रहा था, लोग हज़ारों की संख्या में वहाँ आये। उनको अलीनुर पर अभिमान था।

सावी ने अपने सैनिकों से कहा—"इस दुष्ट को गधे पर चढ़ाकर बाँधो।"

"अलीनुर, इस बूढ़े को मारने दो, अनुमति दो।" भीड़ में से आवाज आई। "तुम जल्दबाजी न करो। जो कुछ लिखा है वह होकर रहेगा।" अलीनुर ने कहा।

तब सावी के सैनिक, अलीनुर को गधे पर बाँधकर बध्यस्थल ले गये। सिर काटने वाला जल्लाद तल्वार लिये तैयार खड़ा था। पास के राजमहल की खिड़की से सुल्तान के हुक्म देने की देरी ही थी। इसलिये सब खिड़की की ओर देखने लगे।

बहुत देर हो गई। मगर सुल्तान का सिर खिड़की में न दिखाई दिया। आखिर उसका सिर बाहर तो दिखाई दिया पर उसकी नजर बध्यस्थल की ओर न थी। दूरी पर आते जाफ़र और उसके सैनिक सुल्तान को दिखाई दिये, वह फिर अन्दर गया। उसने कोई सैनिकों से कहा—"हमारे लिये बगदाद से कोई आ रहे हैं। उनका स्वागत करो।"
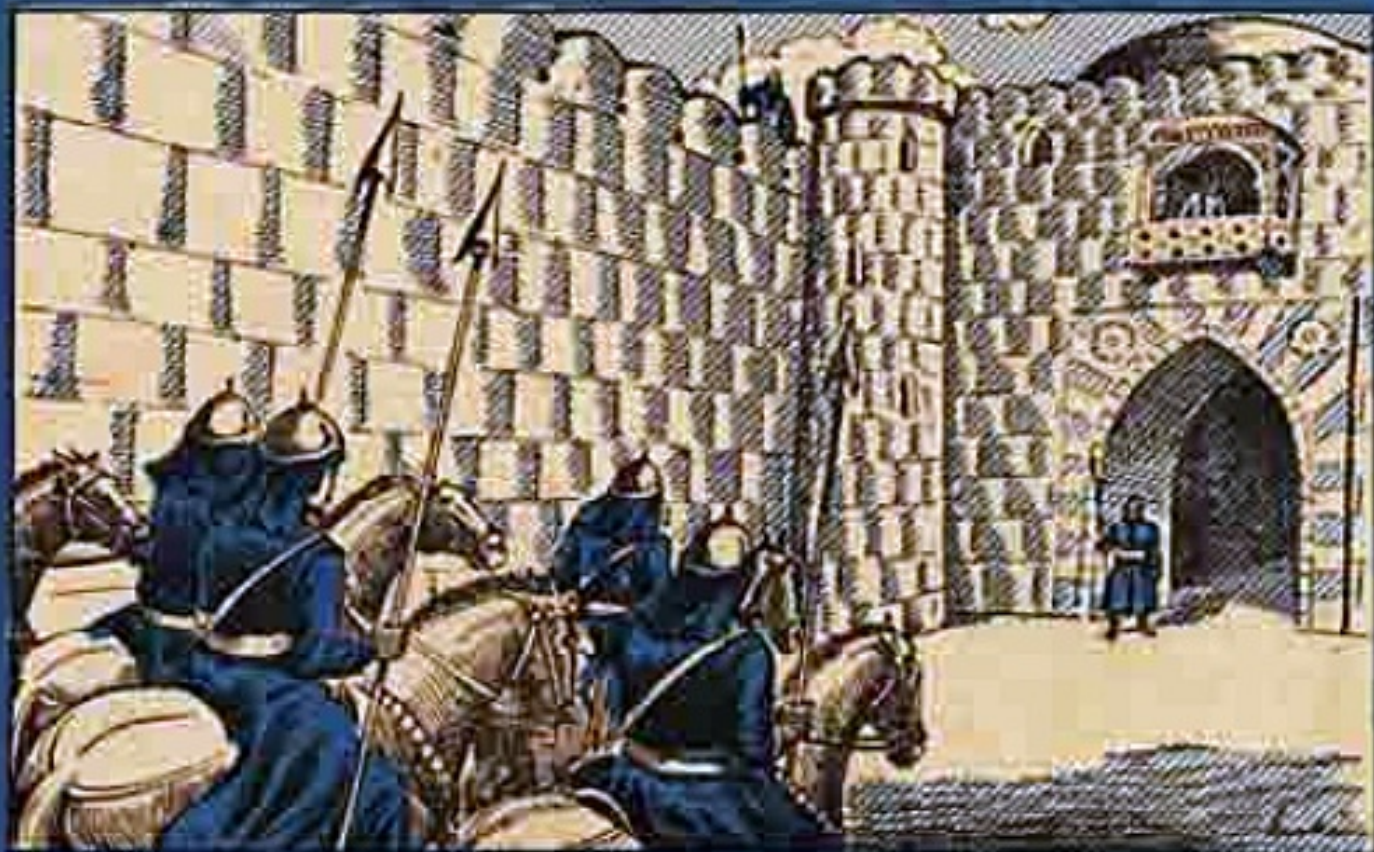
जाफ़र को लोगों के मुँह मालूम हुआ कि अलीनूर को मृत्यु की सजा दी गई है। वह लाल पीला होता हुआ सुल्तान के पास गया। उससे कहा—"अगर अलीनूर का बाल बांका हुआ तो मैं अपराधियों का सिर कटवाऊँगा। अलीनूर कहाँ है?"

सुल्तान ने, बध्यस्थल से अलीनूर को बुलवाया। जाफ़र ने अलीनूर को बसरे का सुल्तान घोषित किया और सुल्तान और सावी को कैद में डलवा दिया।

नये सुल्तान के सम्मान में तीन दिन तक उल्लास-उत्सव मनाये गये। चौथे दिन जाफ़र बगदाद के लिए निकला। "मैं खलीफ़ा के दर्शन करना चाहता हूँ। मैं भी आपके साथ बगदाद आऊँगा।" अलीनूर की यह इच्छा भी जाफ़र मान गया।

उनके बगदाद पहुँचते ही जाफ़र ने, खलीफ़ा से जो कुछ गुजरा था, बताया। खलीफ़ा ने सब सुनकर अलीनूर की ओर मुड़कर कहा—"अलीनूर! इस सावी का, जिसने तुम्हें सताया था, तुम अपने ही हाथों गला काटो।" अलीनूर तलवार लेकर सावी के पास गया। "अलीनूर मैं दुष्ट प्रकृति का हूँ। मैंने अपनी प्रकृति के अनुरूप कार्य ही किये हैं! तुम अच्छे स्वभाव के हो....तुम अपने स्वभाव के अनुरूप कार्य करो।" सावी ने कहा।

यह सुनते ही अलीनूर के हाथ से तलवार गिर गई। सबने अलीनूर की प्रशंसा की। खलीफ़ा को सुल्तान और सावी को माफ़ करना पड़ा।

उसके बाद खलीफ़ा ने अलीनूर को कुछ दिन अपने पास रखा। फिर उसको बहुत से उपहार देकर बसरा भेजा। अलीनूर, प्रियसखी को साथ ले गया। वह बहुत सालों तक बसरे का सुल्तान रहा। (समाप्त)

नमक ही नमक

एक गाँव में एक किसान रहा करता था। उसके एक लड़का और एक लड़की थी। यथासमय लड़के की शादी हुई और बहू घर में आई। उसके बाद घर में तीन स्त्रियाँ हो गईं—किसान की पत्नी, लड़की और बहू।

जब तीन स्त्रियाँ एक घर में हों, तो कुछ न कुछ उथल पुथल होती ही रहती है। इस घर में क्योंकि दो स्त्रियाँ माँ-बेटी थीं, इसलिए उनके तौर-तरीके एक ही तरह के थे। मगर बहू दूसरे घर की थी। उसकी आदतें भिन्न थीं। उसका काम करने का तरीका भिन्न था। इसलिए माँ-बेटी ने बहुत प्रयत्न किया कि वह भी उनकी तरह काम किया करे। बहू भी, यह सोचकर कि जो वे कह रही थीं शायद वह समझ नहीं पा रही थी, वे बार बार कहती जाती थीं।

एक दिन किसान का साला यूँहि उन्हें देखने आया। कहीं इधर उधर का कुछ का कुछ न हो जाये और उसका भाई बुरा मान जाये, यह सोच किसान की पत्नी हर चीज़ का स्वयं ख्याल करने लगी। उसने घड़ा लेकर कुँये की ओर जाते हुए बहू से कहा—"चूल्हे पर शाक बन रहा है, ज़रा उसमें नमक डाल देना। कहीं भूल न जाना।"

दो दिन पहिले बहू शाक में नमक डालना भूल गई थी। सास ने वह याद दिलाने के लिए ही बहू से यह कहा था।

जब हाथ का काम खतम हो गया तो बहू शाक की कढ़ाई में थोड़ा नमक डालकर और काम देखने लगी।

थोड़ी देर बाद उसकी ननद उपले बनाकर अन्दर घर में आई। उसने चूल्हे पर शाक की कढ़ाई देखी।

"वह मूर्ख यूँहि शाक में नमक डालना भूल जाती है। मामा भी आये हुए हैं।" उसने भी मुट्ठी भर नमक उसमें डाल दिया। फिर वह गौ भैंसों को चारा देने चली गई।

इतने में सास पानी का घड़ा लेकर लौटी। चूल्हे पर शाक की कढ़ाई को देखकर उसने सोचा—"उस बेअक्ल को बार बार याद दिलाने से तो अच्छा यही है कि मैं खुद करती आऊँ" सोचकर उसने भी मुट्ठी भर नमक कढ़ाई में डाल दिया।

दुपहर को किसान और उसका साला भोजन के लिए बैठे। साले ने शाक के साथ पहिला कौर लिया। "अरे यह क्या! क्या इसमें नमक डालना भूल गई हो!"

तुरत किसान की पत्नी ने कहा—"यह क्या कह रहे हो भैया! मैंने इसमें नमक डाला है।

तुरत लड़की ने कहा—"मैंने मुट्ठी भर नमक डाला है।"

"आपने कहा था कि नमक डालना मत भूलना इसलिए मैंने भी डाला है।" बहू ने कहा।

"तो यूँ कहो। तभी शाक में नमक ही नमक है।" किसान के साले ने हँसते हुए कहा।

घर की स्त्रियों में एकता न देखकर किसान को गुस्सा आया।

"आज से जो जिसका काम है वह ही वह करे, एक दूसरे का काम न किया करो।" उसने धमकाया।

उसके बाद इधर उधर की ऊँटपटांग घटनाएँ उस घर में नहीं हुईं।

एक गाँव में दो भाई रहा करते थे। उनकी शादियाँ हो गई थीं। उन्होंने पिता की सम्पत्ति को बराबर बराबर बांट लिया था और अपने अपने अलग घरबार बसा लिये थे। परन्तु कुछ दिनों बाद उनका भाग्य भी अलग अलग हो गया। बड़े भाई के हर साल बच्चा होता। उसकी सारी सम्पत्ति चली गई। छोटे भाई का भाग्य ने साथ दिया। वह सम्पन्न हो गया। आखिर बड़े भाई की हालत बहुत बुरी हो गई। पत्नी और बच्चों के पहिनने के लिए चीथड़े तक न थे। उनके पास पेट भरने के लिए माँड़ तक न थी। बुरी हालत थी।

इस हालत में बड़े भाई ने स्वाभिमान भूलकर, छोटे भाई के पास जाकर कहा—"भाई, बच्चे भूख के मारे हाय हाय कर रहे हैं। भगवान की दया से तुम्हारे पास इतना है। जो तुम मदद कर सको, वह करो। मेरा और कोई नहीं है।"

छोटे भाई ने थोड़ी देर सोचा। "सहायता कर तो दूँ परन्तु इस समय मेरे जिम्मे भी बहुत-सा खर्च है। कल मेरा जन्म दिवस है। इसलिये एक दावत का इन्तजाम किया है। बड़े बड़े लोगों को बुलाया है। बड़ों को बुलाना ही नहीं चाहिये, जब बुलाते हैं तो उनका यथोचित आदर सम्मान करना चाहिये। कितना खर्च होगा, यह तुम ही सोचो। इस खर्च के बाद अगर कुछ बचा तो उसे तुम्हें देने में मुझे कोई एतराज नहीं है। कल दावत में तुम, भाभी और बच्चे आओ। तब ये बातें फुरसत से हो सकेंगी। जरूर आना।"

"तुम जब ऐश्वर्य के साथ जन्म दिवस मना रहे हो तो भला हम क्यों!" बड़े भाई ने कहा।

"गरीबी आ पड़ी तो क्या हुआ, क्या हम एक बाप के दो बच्चे नहीं हैं!"

बड़ा भाई खुशी खुशी घर गया। उसने अपनी पत्नी से कहा, "कल मेरे भाई का जन्म दिवस है। उसने हमें दावत में बुलाया है।"

"वाह! अगर मैं इन चीथड़ों में गई तो क्या सब हमें देखकर हँसेंगे नहीं।" पत्नी ने कहा।

"जब बुलाया है, तो न जाना अच्छा न होगा। क्या दुनियाँ हमारी स्थिति नहीं जानती है!" पति ने पूछा।

अगले दिन बड़े भाई का परिवार छोटे भाई के यहाँ गया। सारा घर बड़े बड़े रईसों से भरा हुआ था। वहाँ किसी ने भाई और उसके परिवार को न देखा। कोई खातिरदारी न की। भोजन के समय उनके बैठने के लिए भी जगह न थी।

बड़े भाई की आशा, निराशा में बदल गई। वह और उसका परिवार घर वापिस आ गया। उनके पेट भूख के कारण जल से रहे थे। रास्ते में उनके पीछे एक अभागा चलता आया।

"हमारे पीछे कौन चला आ रहा है। जब सारी दुनियाँ ने हमें छोड़ दिया है तो कौन यह हमारे पीछे चला आ रहा है!" पत्नी ने पूछा।

"वह शायद हमारा दुर्भाग्य होगा।" पति ने कहा।

यह सच था। वह मनुष्य उनका दुर्भाग्य ही था। तब तक उन्होंने तो उसे न देखा था पर वह उनके साथ बहुत दिनों से रहता आया था।

अगले दिन जब बड़ा भाई घर से बाहर निकला तो दरवाजे पर दुर्भाग्य बैठा था।

"देख! इस संसार में कोई सुख नहीं है। क्यों दुखी होते हो। चलो, शराब पीकर मजा उड़ायें...." दुर्भाग्य ने कहा।

"उस के लिए मेरे पास पैसे नहीं हैं।" भाई ने कहा।

"अब तो सरदी चली गई है। अपना पुराना कम्बल बेच दो। अगर फिर सरदी आई और हम जिन्दे रहे तो देखा जायेगा।" दुर्भाग्य ने कहा।

भाई अन्दर जाकर पुराना कम्बल ले आया। जो उसे बेचकर धन मिला, उससे दोनों ने शराब खरीदकर पी।

उसके बाद बड़ा भाई घर की एक एक चीज़ को बेचने लगा और जो कुछ मिलता उससे शराब खरीदकर पीता।

दुर्भाग्य दिन रात उसी के साथ रहता। उसे वह और गिरा रहा था। यह भाई जानता था पर कुछ कर न पाता था।

आखिर बड़े भाई के पास कुछ न बचा। बेचने के लिए भी कुछ न था। कहीं जाकर मेहनत मशक्कत करने की सोचता तो दुर्भाग्य जाने नहीं देता।

"जबतक मैं इस दुर्भाग्य से मुकाबला न करूँगा तबतक मेरी हालत न सुधरेगी।" बड़े भाई ने सोचा। एक दिन वे खेतों के बीच में से चले आ रहे थे। उन्हें एक बड़ा पत्थर दिखाई दिया।

"यहाँ कहीं पहाड़ नहीं हैं। इतना बड़ा पत्थर कहाँ से आया? शायद किसी ने इसे यहाँ लाकर रखा होगा। हो सकता है कि इसके नीचे कोई खजाना हो।" बड़े भाई न कहा।

"यह सब तेरा गलत ख्याल है। क्यों कर यहाँ कोई खजाना होगा? अगर

होता तो क्या वह तुझे या मुझे दिखाई देता! हमारी क्या इतनी भी किस्मत है!" दुर्भाग्य ने कहा।

परन्तु बड़े भाई ने उसकी बात न सुनने का निश्चय कर लिया था। वह तुरत गाँव गया। वहाँ एक किसान से गाड़ी बैल लेकर उस जगह पहुँचा, जहाँ पत्थर था। रास्ते भर दुर्भाग्य उसको निरुत्साहित करता रहा। पर बड़े भाई ने उसकी एक न सुनी।

पत्थर के पास गाड़ी से उतर कर, बड़े भाई ने दुर्भाग्य से कहा—"ज़रा एक हाथ तो लगा, इस पत्थर को एक तरफ़ हटा दें।"

दोनों मिलकर पत्थर को एक तरफ़ हटाने लगे। बड़े भाई ने जैसे सोचा था, उस पत्थर के नीचे एक छोटा गढ़ा था। उसमें सोने की मुहरें भरी थीं! दोनों ने उस सोने को गाड़ी में डाला।

"कहीं और थोड़ा रह न गया हो!" बड़े भाई ने पूछा।

"देखने की कोई ज़रूरत नहीं। अब कुछ नहीं है।" दुर्भाग्य ने कहा।

"गढ़े में कूदकर होशियारी से देखो। दो-तीन मुहरें रह गयी हों! क्यों रहने दी जायें!" भाई ने कहा।

दुर्भाग्य जब कोसता-कुढ़ता गढ़े में गया और झुक कर खोजने लगा तो भाई पत्थर को यथास्थान रखकर गाड़ी पर चढ़कर घर चला आया। दुर्भाग्य से उसका इसतरह पिंड छूटा।

उसके बाद, उसपर कोई कष्ट न आये। वह पत्नी, बाल-बच्चों के साथ आराम से रहने लगा।

[११]

[ट्रॉय युद्ध के बाद रूपधर स्वदेश के लिए निकला। मार्ग में बहुत वर्षों तक तरह तरह की मुसीबतें झेलता रहा। वह अपने सैनिकों को भी खो बैठा। आखिर जैसे तैसे वह स्वदेश पहुँचा। पर अभी उसके कष्ट समाप्त न हुए थे। उसकी आराध्य देवी बुद्धिमति ने उसका रूप रंग बदलकर उसको बूढ़ा बना दिया। इस बीच इथाका में—]

ट्रॉय नगर से ग्रीकों के लौटने के बाद यह अफ़वाह फैल गई थी कि रूपधर रास्ते में मर गया था। इथाका और उसके समीपवर्ती द्वीपों के एक सौ बारह राजकुमार रूपधर के घर आ गये। रूपधर की पत्नी पद्ममुखी से विवाह करके उनमें से हरेक इथाका का राजा बनने की कोशिश में था।

धीरमति अभी छोटा था। जब वह गोदी का बच्चा था तभी रूपधर युद्ध में चला गया था। इसलिए धीरमति अपने पिता को बिल्कुल न पहिचानता था। परन्तु वह अपने पिता के आगमन की उत्कंठापूर्वक प्रतीक्षा कर रहा था। जब उसके बारे में कोई समाचार न मिला तो वह चिन्तित रहने लगा। "अच्छा होता यदि यह निश्चित रूप से जाना जा सकता कि वे मर गये थे। मेरी माँ किसी से शादी कर सकती थी!" वह सोचा करता।

[एक ग्रीक पुराण कथा]

राजकुमारों ने धीरमति को निकम्मा बना रखा था। उसके घर में धरना दे उसका खाना खाकर, शराब पी-पाकर मज़ा उड़ा रहे थे। हर कोई यह शेखी मारता कि पद्ममुखी उसकी पत्नी थी।

पद्ममुखी को पूरा विश्वास था कि उसका पति वापिस आयेगा। ज्योतिषी से उसने मालूम कर लिया था कि रूपधर मरा न था। इसलिए उसने फिर शादी करने से इनकार कर दिया था। परन्तु उससे शादी करने के लिए आये हुए राजकुमार कहा करते कि रूपधर मर गया है और उसे शादी करने के लिए सताते। उनसे छुटकारा पाने के लिए उसने एक चाल चली। "मैं अपने ससुर की लाश को ढकने के लिए कपड़ा बुन रही हूँ, उसके पूरा होते ही स्वयंवर रखूँगी।" राजकुमार इसके लिए मान गये।

तब से रोज़ पद्ममुखी दिन में कपड़ा बुनती और रात को बुने हुए कपड़े को उधेड़ देती। इस प्रकार उसने तीन साल बिताये। फिर राजकुमारों ने उसे पकड़ लिया। उनकी धूर्तता की हद न रही।
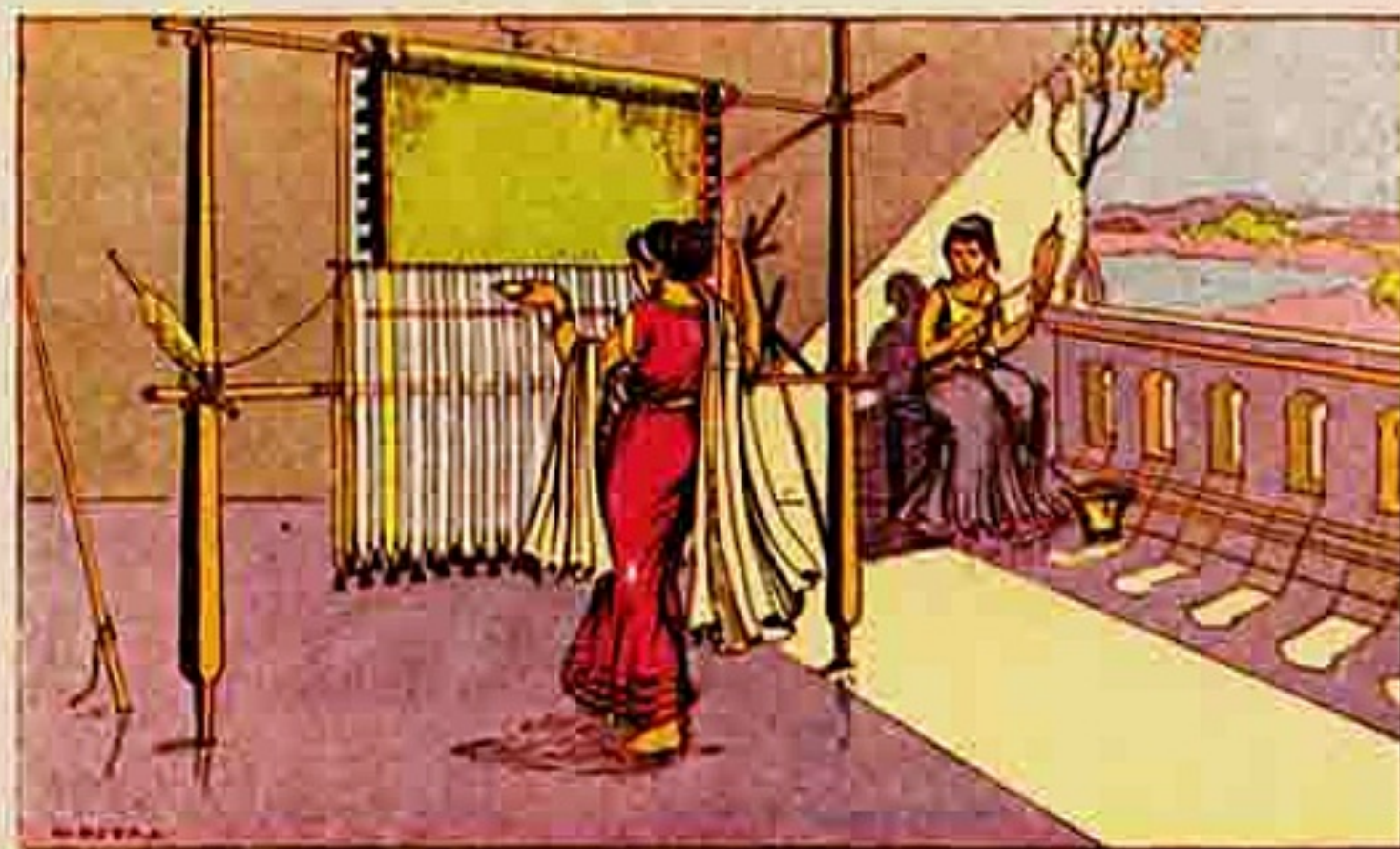
यह देख धीरमति ने एक निर्णय किया। उसने पैलास जाकर नवचोत से और स्पार्टा जाकर प्रताप से मिलकर अपने पिता के बारे में जानने की ठानी। सबसे अन्त में प्रताप घर लौटा था इसलिए वह जरूर कुछ न कुछ जानता होगा।

"अगर यह पता लग गया कि पिता मर गये हैं तो उनका श्राद्ध वगैरह करूँगा और माता के लिए स्वयंवर का प्रबन्ध करूँगा। इन दुष्टों को मैं तनिक भी न सहूँगा। मेरी उम्र के लड़के कितनी ही बहादुरी से काम कर रहे हैं। अगर मेरे पिता जीवित रहे तो मैं इनसे किसी न किसी तरह बदला लूँगा।" धीरमति ने सोचा।

यह निश्चय करके उस दिन धीरमति ने राजकुमारों से कहा—"महाशयो! आप सब मेरी माँ से शादी करना चाहते हैं। मगर मुझे आपका व्यवहार बिल्कुल पसन्द नहीं है। कल मैं चौक में सबके सामने आपको मेरा घर छोड़कर चले जाने के लिए कहने आ रहा हूँ। आप अपने घर में पीजिये और मौज उड़ाइये। अगर आपका यही रवैया रहा तो आपका नाश भी हो सकता है।"
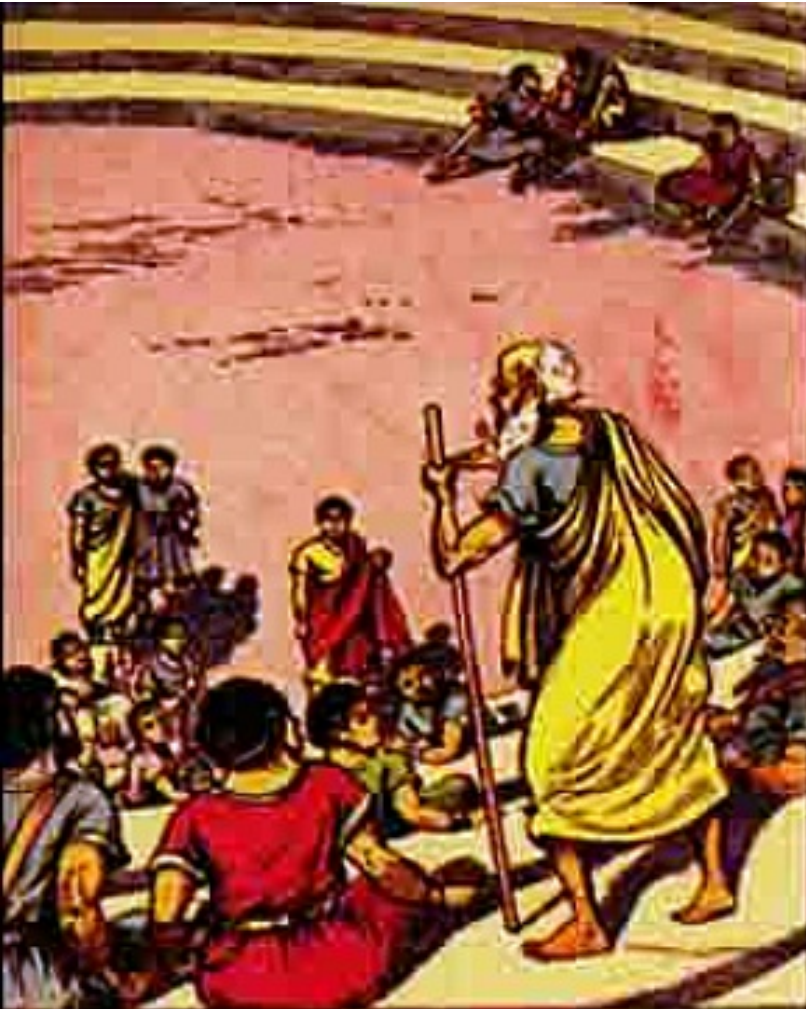
उस लड़के का यह साहस देखकर उन दुष्टों को आश्चर्य हुआ।

अगले दिन भीरमति ने ढिंढोरा पिटवा दिया कि सब शहर के चौक में एकत्रित हों। वह हाथ में भाला और दो कुत्तों को लेकर—शान से चौक में पहुंचा। वहां एकत्रित पँचायतदारों ने उसको पिता के उच्च आसन पर बैठने दिया।

जब सब यथास्थान पर बैठ गये तो वृद्ध अईगुस ने उठकर पहिले पहल कुछ कहा। उसका एक लड़का, रूपधर का सैनिक था और वह भाल लोचन द्वारा खा लिया गया था। उसका एक और लड़का उन राजकुमारों में था जो पद्ममुखी से शादी करना चाहते थे। उसने कहा—"जिस किसी ने भी इस सभा का प्रबन्ध किया है उसने अच्छा ही किया है क्योंकि जबसे रूपधर युद्ध में गया है, तबसे इथाका में कोई सभा ही नहीं हुई है। आज हम किसलिए यहाँ एकत्रित हुए हैं, यह मैं जानने के लिए उत्सुक हूँ।"

वृद्ध की ये बातें सुनकर भीरमति का उत्साह बढ़ा। उसने खड़े होकर कहा—"महाशयो! इस सभा का आयोजन मैंने किया है। मैंने अपने कष्टों को सुनाने के लिए ही आपको निमन्त्रित किया है। पिता की मृत्यु से भी बड़ी आफ़त मुझ पर आ पड़ी है। वह यह कि मेरी माँ से शादी करने के लिए कई राजकुमार घर आये हुए हैं। उनके व्यवहार से मेरी नाक में दम आया हुआ है। मुझे भय है कि शीघ्र ही मेरा सत्यानाश हो जायेगा। उन लोगों में कई यहाँ उपस्थित सज्जनों के पुत्र भी हैं। उनमें इतना साहस नहीं कि हमारे नाना के पास

जाकर मेरी माँ का हाथ माँगे। इसलिए हमारे घर में वे धरना दिये हुए हैं। हमारे पशु काटकर खा रहे हैं। हमारी शराब पी रहे हैं और जो चाहे सो कर रहे हैं। क्योंकि मेरे पिताजी घर में नहीं हैं इसलिए हमारा घर घर नहीं है, मछली का बाजार-सा है। मेरे पिता ने इस देश का क्या अपकार किया था कि मुझे आज यह भुगतना पड़ रहा है? यह आप सब के लिए भी सोचने का विषय है।"

तुरत दुर्बुद्धि नाम के एक व्यक्ति ने उठकर कहा—"धीरमति, जो तुमने आपत्ति प्रकट की है, उसका कोई अर्थ ही नहीं है। जब गल्ती सारी तुम्हारी माँ की है तो हमें क्यों कोसते हो! तीन साल तक तुम्हारी माँ हम सब को धोखा देती रही। उसने हममें से हरेक को ललचाया; कहा कि कपड़े के बुनने के समाप्त होते ही स्वयंवर करेगी। तीन साल बीत गये अब चौथा साल चल रहा है और वह कपड़ा खतम नहीं होता। अगर रात को जो कुछ दिन में बुना है, उधेड़ दिया जाय तो वह कैसे खतम होगा? उससे शादी करने की इच्छा रखनेवालों की तरफ से मैं यह कह रहा हूँ। उसे तुम अपने घर से हटा दो और कहो कि जिससे वह चाहे, शादी कर ले। अगर वह इस तरह हमें धोखा देती रही, तो हम तुम्हारा घर न छोड़ेंगे!"

"मैं अपनी माँ को अपने घर से नहीं भेज सकता और मैं ऐसी स्थिति में भी नहीं हूँ कि जो कुछ वह मायके से लाई थी, उसे वापिस कर दूँ।" धीरमति ने कहा।

एक और बूढ़े ने खड़े होकर कहा—"रूपधर जब युद्ध के लिए जा रहा था,

तभी मैंने बताया था कि वह जाने के बीस वर्ष पश्चात् बहुत मुसीबतों के सहने के बाद घर लौटेगा। अब तक जो कुछ मैंने कहा था वह ठीक निकला है। जो उसके घर धरना दिये हुये हैं, उनके बुरे दिन नजदीक हैं।

"तू अपना यह ज्योतिष, अपने लड़के को बता। हम तेरी इस धमकियों से डरनेवाले नहीं हैं। रूपधर यदि वापिस आ भी गया तो वह हमें अपने घर से हटाने का साहस नहीं कर सकता।" एक और ने शेखी बघारी।

आखिर धीरमति ने कहा—जो कुछ मुझे कहना था मैंने कह दिया है। अगर आपने मेहरबानी करके मुझे एक नौका और बीस नाविक दिये तो मैं स्पार्टा और पैलास जाकर अपने पिता के बारे में कुछ जान सकूँगा। अगर यह पता लगा कि वे जीवित हैं तो एक साल तक इनकी धौंस सहता रहूँगा। और अगर यह पता लगा कि मेरे पिता मर गये हैं तो मैं उनका श्राद्ध करूँगा और माँ के विवाह का मैं स्वयं प्रबन्ध करूँगा।"

सभा के समाप्त होने के बाद धीरमति घर न जाकर समुद्र तट पर गया। वहाँ उसे मदन नाम का एक व्यक्ति दिखाई दिया यह मदन रूपधर का अच्छा मित्र था। उसने धीरमति को देखकर कहा—"आज तुम्हें देखकर बड़ी खुशी हुई—अब पता लगा जैसा पिता वैसा पुत्र। इथाका में बहुत सी नौकायें हैं। उनमें से सबसे अच्छी तुम्हारी यात्रा के लिए चुनूँगा। यात्रा के लिए आवश्यक नाविक भी मैं ही खोजकर जुटाऊँगा। तुम घर जाकर यात्रा की तैयारी करो।"

धीरमति तुरत घर चला गया। उसको देखते ही उसके घर में धरना दिये हुए लोग उसका परिहास करने लगे।

"अरे! बाप रे बाप, यह हमारा खून चूसने की सोच रहा है। जाने क्या हम इसको समझे हुए थे।" एक ने कहा।

"जानते हो यह स्पार्टा और पैलास क्यों जा रहा है? सेना इकट्ठा करके लाने के लिए।" एक और ने कहा।

"कहीं थोड़ा विष लाकर हमारी शराब में न मिलाये!" तीसरे ने कहा।

"यह भी सोचो कि वह अपने पिता की तरह समुद्र में एक बार गया कि नहीं जाता ही रहेगा। इसकी सम्पत्ति आपस में बाँटने के लिए हम मरेंगे।" चौथे ने कहा।

श्रीरमति ने उनकी बातें न सुनी। उसने अपनी दायी को अपनी यात्रा के बारे में बताया। फिर दुकान में जाकर उसने वे सब चीज़ें तैयार रखने के लिए कहा, जिनकी यात्रा के लिए जरूरत थी।

"बेटा, तुम न जाओ....अगर तुम भी यात्रा पर कहीं चले गये तो तुम्हारी माँ की गति क्या होगी!" वह बूढ़ी दायी रोने लगी।

"यह विधि का निश्चिय है। तुम मुझे न रोको। आज रात को, जब मेरी माँ सो रही होगी तब मैं चला जाऊँगा। तुम प्रतिज्ञा करो कि जबतक वह मेरी यात्रा के बारे में न पूछे तबतक तुम नहीं बताओगी। यात्रा के लिए आवश्यक खाने पीने की चीज़ें तैयार रखो।"

इस बीच, सहन इधर उधर घूम फिरकर यात्रा के लिए जरूरी नाविकों को बुलाकर समुद्र तटपर ले आया। अच्छी नौका भी मिल गई। इतने में अन्धेरा हो गया। रूपधर के घर में सब खा पीकर सो रहे थे। उस समय सहन ने आकर श्रीरमति से कहा—"बेटा! यात्रा के लिए सब तैयार है, बस, तुम्हारे आने की ही देरी है।"

दोनों मिलकर समुद्र तट पर पहुँचे। नाविकों ने यात्रा के माल-असबाब को रूपधर के घर से लाकर नौका में रखा। श्रीरमति नौका में चढ़ा। नाविकों ने लंगर उठाया और पाल चढ़ा दिये। अनुकूल हवा चल रही थी। नौका कैलास की ओर चल्दी। (अभी और है)

बन्दर की पूँछ छोटी क्यों है ?

कहते हैं कि किसी समय बन्दर की पूँछ बीस गज से भी अधिक लम्बी होती थी। पर एक दुष्ट लोमड़ी की धूर्तता से आजकल के बन्दरों की पूँछ छोटी हो गई है। कहानी यों है :

एक बार कोई बन्दर किसी लोमड़ी से यह राय लेने गया कि किस विधि से वह अधिक-से-अधिक मछलियाँ पकड़ सकेगा।

लोमड़ी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया :

"यदि जाड़े की रात में जब कड़ाके की ठन्ड पड़ रही हो, किसी सरोवर के मध्य में स्थित चट्टान पर बैठकर अपनी पूँछ को जल में डुबोये रखो तो अवश्य ही पूँछ के चारों ओर बहुत-सी मछलियाँ इकट्ठी होने लगेंगी।"

बन्दर यह सुनकर मन ही मन बहुत खुश हुआ और लोमड़ी के कहने के अनुसार चट्टान पर बैठ कर मछलियों की प्रतीक्षा करने लगा।

ज्यों-ज्यों रात बीतती जाती थी त्यों-त्यों बन्दर की पूँछ भारी होती जाती थी। कारण यह था कि ठण्डी रात होने के कारण तालाब का पानी जमकर बरफ़ हो रहा था और बन्दर मन में सोच रहा था कि आज तो वह बहुत-सी मछलियाँ मार लेगा। अभी थोड़ी देर में ही बहुत-सी मछलियाँ जमा हुई जाती हैं। किन्तु सरदी बहुत कड़ाके की पड़ रही थी और बन्दर थर-थर काँप रहा था।

आखिर जब बन्दर से सरदी न सही गई तो लाचार हो उसने पूँछ जल से बाहर खींचनी चाही, पर यह क्या ! पूँछ खिंच क्यों नहीं रही है ! बन्दर ने बहुत कोशिश की किन्तु वह अपनी पूँछ न निकाल सका। क्योंकि तालाब का पानी जमकर बरफ़ बन गया था। अब तो बन्दर बहुत चिल्लाया और जोर जोर से पूँछ खींचने लगा। आखिर पूँछ चटक कर टूट गई।

जापानी लोगों का विश्वास है कि पूँछ खींचते समय बन्दर को बहुत जोर लगाना पड़ा था इसीलिए बन्दर का मुँह भी लाल हो गया। —श्रीकृष्ण

क़िस्मतवाला नौकर

एक किसान था। वह खेतों में मजदूरी करके जिन्दगी बसर किया करता था। उसके तीन लड़के थे। बड़ा लड़का, साहुकार के घर काम के लिए लगा।

"अबे, मुर्गे ने बाँग दी कि नहीं कि तुझे काम पर लग जाना होगा नहीं तो तुझे काम पर न रखूँगा।" साहुकार ने अपने नौकर से पहिले ही कह दिया।

नौकर भी मुर्गे के बोलते ही काम पर जाने लगा। तीन दिन बीत गये। चौथे दिन वह मुर्गे की बाँग के साथ नहीं उठा। उसी दिन साहुकार ने नौकर को काम से हटा दिया। और उसे एक पाई भी न दी।

फिर दूसरा लड़का काम पर गया। सप्ताह भर उसने काम किया। उसके बाद उसकी भी उसके भाई की गति हुई।

आखिर तीसरा लड़का काम पर आया। वह जानता था कि कैसे उसके भाई साहुकार द्वारा हटाये गये थे। उसने साहुकार को सबक सिखाना चाहा।

साहुकार ने अपनी आदत के अनुसार अपने नये नौकर से कहा—"तुम्हें रोज मुर्गे के बाँग लगाते ही काम पर आना होगा। अगर ऐसा न किया तो तुम्हें एक क्षण भी न रखूँगा। सवेरे से शाम तक काम करना होगा।"

"यह सब मँजूर है।" नये नौकर ने कहा।

"तो तुम तनख्वाह कितनी चाहते हो?"

"मुझे अधिक नहीं चाहिये। एक साल काम करने के बाद आपको एक मुक्का लगाऊँगा और मालकिन को एक बार चूँटी काटूँगा।" नौकर ने कहा।

पूर्ण सिंह

"यह तो पागल मालूम होता है।" साहुकार ने कहा। नौकर को देखकर वह मन ही मन हँसा। फिर वह उसकी बात मान गया।

उस दिन काम खतम करके सोने के लिए जाते समय नौकर ने मुर्गा पकड़ा, उसका गला बाँध दिया और जाकर सो गया।

सूरज निकल आया पर वह मुर्गा न बोला। नौकर ने जाकर मालिक से कहा—सूरज निकल आया और यह मुर्गा क्यों नहीं बोलता है! मुझे थोड़ा खाने को दीजिये, मुझे काम पर जाना है।"

साहुकार यह न जान सका कि मुर्गा क्यों नहीं बोला था।

"चल, हम शहर चलें," वह एक और मुर्गा खरीदना चाहता था। वे शहर आ रहे थे कि रास्ते में उन्हें एक मारनेवाला बैल दिखाई दिया। पाँच आदमी रस्सी बाँधकर उसे खींच रहे थे और वह काबू में नहीं आ रहा था।

"कहाँ जा रहे हो भाइयो!" नौकर ने उनसे पूछा।

"बड़ा अड़ियल है यह बैल। इसे बेचने ले जा रहे हैं। अगर किसी ने इसे न खरीदा तो कसाई को दे देंगे।" उन्होंने कहा।

"अच्छे बैल के लिए एक चोट काफ़ी है।" कहकर नौकर ने बैल के माथे पर एक मुक्का मारा। तुरत उतना बड़ा बैल मरकर गिर गया।

उसको ले जानेवालों ने कहा—"पिंड छूटा पर इसका चमड़ा मिल जाये तो काफ़ी है।"

"इसमें क्या रखा है!" कहते हुए नौकर ने बैल के चमड़े को दोनों अंगुलियों के बीच में रखकर खींचा। तुरत चमड़ा

केले के छिल्के की तरह निकल आया। तब साहुकार जान गया कि उसके नौकर का मुक्का और चूँटी कितनी जबर्दस्त थी। वह पसीना पसीना हो गया।

"शहर किसी और दिन चलेंगे। आज घर ही चलें।" साहुकार ने कहा। उसने एक और मुर्गा खरीदने का इरादा छोड़ दिया और घर वापिस चला गया।

उसने अपनी पत्नी से कहा—"यह हमारा नौकर नहीं यम-सा है। जब मैंने इसको काम पर लिया और इससे तनख्वाह पूछी तो इसने कहा कि मुझे एक मुक्का मारेगा और तुझे एक बार चूँटी काटेगा। मुझे क्या मालूम था। मैंने सोचा कि इसमें हमारा ही फायदा था। मालूम है, आज क्या हुआ!" फिर उसने बताया कि कैसे एक मुक्के से उसने एक बैल को मार दिया था और कैसे एक चूँटी से उसका चमड़ा अलग कर दिया था।

"बाप रे बाप, इस तरह के आदमी को एक मिनट भी न रखो। जैसे मैं कहूँ वैसे करोगे तो इससे छुटकारा मिल जायेगा। आज शाम को जब वह गाय भैंसों को लाये तो कहना कि एक गाय

वापिस नहीं आई है, उसे अन्धेरे में ही जंगल भेजना। वहाँ उसे कोई जंगली हिंस्र जन्तु हजम कर लेगा।" साहुकार की पत्नी ने कहा। दुष्टता में वह अपनी पति से किसी कदर कम न थी।

साहुकार को यह सलाह जँची। सूर्यास्त के समय, जब नौकर गौवों को घर हाँक कर लाया तो उसने नौकर से कहा—"क्या सब गायें घर आ गई हैं? एक गौ कम दिखाई देती है? गौव्वे सब हैं कि नहीं गिनना चाहिये था कि नहीं?"

"गिना था। सब ठीक थीं।" नौकर ने कहा।

"ठीक क्या है? एक गौ जंगल में ही रह गई है। तुरत जाकर खोज कर लाओ।" साहुकार ने कहा।

यह सोचकर कि उसने ही गल्ती की है, नौकर अन्धेरे में ही जंगल गया। घूमते-घूमते उसे एक गुफा के सामने कोई काली चीज़ दिखाई दी।

"तू यहाँ चर रही है? चल घर।" वह उस चीज़ का गला पकड़कर जल्दी जल्दी घर ले गया और पशुओं के छप्पर

में उसे डालकर उसने ताला बन्द कर दिया। वह जंगल से एक भालू पकड़ लाया था। मगर उसे यह पता न था।

जब अगले दिन सवेरे साहुकार ने ताला खोलकर अन्दर देखा तो गौवें सब मर गई थीं। एक बड़ा भालू एक कोने में पड़ा आराम से खुर्राटे मार रहा था।

साहुकार छाती पीटता नौकर के पास गया—"देखा तुमने! कोई भालू हमारे पशुओं के घर में घुसकर सब गौवें खा गया।"

नौकर ने आकर देखा। "सच है। शायद रात में मैं इसी भालू को पकड़ लाया था। अन्धेरे में, मुझे कुछ ठीक पता नहीं लगा।"

साहुकार को तो लकवा-सा मार गया। उसने जाकर पत्नी से जो कुछ गुजरा था कहा। उसने कहा—"इसे भूत खाये, यह कहाँ से हमारे सिर पर आ मरा है।"

"भूत कहने से याद आया, अगर इससे छुटकारा पाना है तो इसे भूतों को सौंपना होगा।" कहकर साहुकार नौकर के पास आया।

"क्यों बे, जानते हो हमारे खेत के उत्तर में भूतों का एक पोखर है। वहाँ रहनेवाले भूतों को हमें बहुत-सा किराया देना है। जाकर वसूल करके आओ।"

"उन्हें कितना देना है!" नौकर ने पूछा।

"जितना दें, लेते आना, उनसे भला क्या भाव-ताव!" साहुकार ने कहा।

नौकर यह मान गया। सन का गट्ठर लेकर भूतों के पोखर पर गया और वहीं रस्सी बटने लगा।

थोड़ी देर बाद, पोखर के पानी से सिर उठाकर एक पिशाच ने नौकर से पूछा—"क्यों भाई क्या कर रहे हो!"

"देखते नहीं हो, रस्सी बट रहा हूँ।" नौकर ने कहा।

"किसलिए?" भूत ने पूछा।

"किसलिए! तुम सब भूतों को पकड़कर ले आने के लिए।" नौकर ने कहा।

"हमने कौन-सी गल्ती की है!" भूत ने पूछा।

"गल्ती! सुना है तुम मालिक को ठीक किराया नहीं दे रहे हो!" नौकर ने पूछा।

"थोड़ा ठहर, मैं सरदार से पूछकर आता हूँ।" कहकर वह पानी में डूब गया।

नौकर ने रस्सी बटकर, उसके दोनों सिरे मिलाकर उसे किनारे पर रख दिया। फिर उसने एक गहरा गड्ढा खोदा। उसपर टहनियाँ आदि डालीं। उनपर उसने अपने सिर की टोपी रखी। उसमें एक छेद किया।

इतना सब करने के बाद भूत बाहर आया। उसने कहा—"हम तो कहीं पाताल में रहते हैं, तुम कैसे हमें रस्सी से पकड़ सकोगे—यह हमारा सरदार पूछ रहा है।"

"क्या तुम उसे मामूली रस्सी समझ रहे हो! वह एक ऐसी रस्सी है, जिसका सिरा ही नहीं है।" कहकर नौकर रस्सी

को हाथ में घुमाने लगा—वह घुमाता जाता था और रस्सी खतम न होती थी। यह देख भूत हैरान रह गया—"खैर, हमें आखिर तुम्हें देना कितना है?"

नौकर ने कहा—"तुम इस टोपी को चान्दी के रुपयों से भर दो, यह काफ़ी है, तुम्हारा ऋण खतम हो जायेगा।"

भूत चला गया। और चान्दी के रुपयों को लाकर टोपी में भरने लगा। क्योंकि टोपी में छिद्र था, छिद्र में से रुपये नीचे गढ़े में चले जाते थे इसलिए बहुत से रुपये डालने पर भी टोपी न भरी।

"इस छोटी टोपी में कितनी चान्दी भरी है।" सोचता हुआ भूत चला गया।

भूत के चले जाने के बाद नौकर उस चान्दी को गाड़ी में ढोकर साहुकार के यहाँ आया।

उसको और उसके लाये हुए चान्दी को देखकर साहुकार का खुश होना तो अलग, उसका माथा ठनका। उसने पत्नी से जाकर कहा—"सत्यानाश हो गया। इसका तो भूत भी कुछ न बिगाड़ सके। हम जरूर इसके हाथ मारे जायेंगे।" वह रोने लगा।

"जोर से मत रोओ। क्योंकि हम इसे भगा नहीं पायेंगे, इसलिए हम ही आधी रात के समय भाग जायेंगे। सम्पत्ति जाती है तो जाने दो, जान बचे लाखों पाये।" साहुकार की पत्नी ने कहा।

उस दिन रात को पति पत्नी घर छोड़कर भाग गये। उनकी सम्पत्ति नौकर की हो गई। वह अपने पिता और भाइयों को अपने घर ले आया। भूतों के दिये हुए रुपयों से आराम से रहने लगा।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९५८ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिये। परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. ७, जून '५८ के अन्दर भेजनी चाहिये।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

जून – प्रतियोगिता – फल

जून के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं। इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो : शृंगार है मगर प्यार नहीं
दूसरा फ़ोटो : प्यार है मगर शृंगार नहीं

प्रेषक : नन्दगोपाल नैयर,
C/o सोहनलाल अमरनाथ, जागनाथ रोड, स. म. २, नागपुर-२.

मछलियों की फसल

कैरो नगर में गुहा नाम का एक प्रसिद्ध हसोड़ रहा करता था। उसे एक दिन बागवानी करने की इच्छा हुई। इसलिए उसने अपना सारा आँगन खोद डाला और तरह तरह के पौधे लगाये। बड़े ध्यान से उनकी देख-भाल करने लगा।

यह जानकर कि गुहा को बागवानी में दिलचस्पी हुई है, उसके कई मित्रों ने उसको सलाह दी, उसकी भरसक मदद की। थोड़े दिनों में गुहा के बाग में अच्छे अच्छे फूल खिलने लगे।

एक दिन एक रईस गुहा को देखने आया। वह तब बाग में था।

"सुना है कि तुम बड़े बागवान बन गये हो। परन्तु तुम्हारे बाग में कोई नये तरह के पौधे क्यों नहीं दिखाई देते!" रईस ने पूछा।

"जो जो बीज मिलते हैं, उनको उगा कर देख रहा हूँ। अगर नये पौधे नहीं होते तो उसमें मेरा कसूर नहीं है।" गुहा ने कहा।

"नये बीज तो मैं दे दूँगा पर मुझे सन्देह है कि तुम उन्हें उगा नहीं पाओगे।" रईस ने कहा।

"आप सन्देह न कीजिये। मैं हर बीज उगा लेता हूँ।" गुहा ने कहा।

"तो मैं कल सवेरे नौकर के हाथ बीज भेज दूँगा। उन्हें हमारे दामाद ने हाल में ही बागदाद से भेजा था। क्योंकि मुझे बागवानी में दिलचस्पी न थी इसलिए मैंने उन्हें पुड़िया में बाँधकर रख दिया है।" रईस ने कहा।

अगले दिन सवेरे रईस के नौकर ने पुड़िया देकर कहा—"इसे मालिक ने

आपको देने के लिए दिया है। इन्हें बड़ी सावधानी से उगाने के लिये कहा है।"

गुहा ने पुड़िया खोल कर नौकर से पूछा—"क्या तुम्हारे मालिक ने यह न बताया था कि ये किस चीज़ के बीज हैं?"

"उन्हें ही नहीं मालूम है। उन्होंने कहा है कि जब पौधे बड़े हो जायेंगे तो वे उन्हें देखने आयेंगे।" यह कहकर नौकर चला गया। बागवानी करनेवाले को जब किसी बीज के बारे में मालूम नहीं होता तो वे साधारणतया उसे मुख में डालकर उसका स्वाद देखते हैं। गुहा ने भी वही किया और रईस का धोखा ताड़ गया।

वे बीज नहीं थे, सुखाये हुए मछली के अंडे थे। उसका मजाक करने के लिए ही उस रईस ने वे दिये थे। गुहा ने उससे बदला लेने की ठानी।

दो सप्ताह गुज़र गये। गुहा जब बाजार गया हुआ था तो रईस ने जो सामने से आ रहा था, पूछा—"क्यों गुहा, गुलाब ठीक हैं न?"

"आपकी मेहरबानी से इस बार तो गुलाब ऐसे खिले हैं कि पत्ते भी नहीं दिखाई देते।" गुहा ने कहा।

"अरे हाँ, जो बीज मैंने भेजे थे, वे बोये कि नहीं?" रईस ने पूछा।

"तभी बो दिये थे।" गुहा ने कहा।

रईस ने हँसी रोकते हुए कहा—"शायद उगे नहीं होंगे। हमारे दामाद ने बताया था कि उन्हें उगाना मामूली बागवान के बस की बात नहीं है।"

"हटाइये, मैंने उनके लिये क्यारियाँ बनाईं, ज़रूरी खाद दिया। आपके भेजे हुए बीज अभी अभी उग रहे हैं। उनपर नजर या धूप नहीं लगनी चाहिये। इसलिए उन्हें ढक रखा है,

कल हमारे घर तशरीफ लाइये, तब उन्हें दिखाऊँगा।

रईस ने कहा—"अच्छा, तो कल ज़रूर आऊँगा।" वह अपने रास्ते चला गया।

गुहा मछली की दुकान में जाकर कुछ छोटी मछलियाँ लेकर घर गया। उसने अपने छोटे लड़के को बुलाकर कहा—"बेटा, इनको ले जाकर बाग में इस तरह गाड़ो कि इनका मुख दिखाई देता रहे और उनको कसोरों से ढक दो।"

गुहा के लड़के ने वैसा ही किया।

अगले दिन सवेरे रईस आया। गुहा उसको साथ ले गया और कसोरों को दिखाकर उसने कहा—"पौधे उनके नीचे हैं।" उसने एक कसोरा उठाकर दिखाया। "रईस को एक मछली दिखाई दी, मानो वह ज़मीन तोड़कर उग रही हो।" गुहा ने जब सब कसोरे उठाकर दिखाये तो रईस का सिर चकरा गया।

"आश्चर्य! कल मैंने तेरी बात पर विश्वास न किया था। आज स्वयं देखा है इसलिए, विश्वास कर रहा हूँ।"

"इन चीज़ों का उगाना कोई मुश्किल नहीं है। अगर मेरे पास दस एकड़ हों तो फसल तैयार कर दूँ।"

"यह काम मैं ही करूँगा।" रईस ने कहा। घर जाकर उसने अपने किसान से कहा—"अरे, इस साल खेतों में सूखे मछली के अंडे बोओ।" किसानों ने वैसा ही किया।

गुहा ने यह खबर सारे शहर में फैलादी। सब रईस को देखकर हँसने लगे। रईस पछताने लगा कि गुहा का परिहास करने का कारण उसको ठीक फल मिला था।

पतंगे

आम तौर पर जो पतंगे हम देखते हैं, वे बहुत सुन्दर होते हैं। जब वे पंख फैलाकर धूप में उड़ते हैं और जब उनके पंखों पर तरह तरह के रंग चमकते हैं तो हर कोई खड़े होकर उन्हें देखना चाहता है।

ये पतंगे काटते नहीं हैं। जब वे खाने-पीने के लिए किसी पौधे या लकड़ी पर बैठते हैं तो उन्हें आसानी से पकड़ा जा सकता है। इसी कारण बच्चे उनको पकड़ लेते हैं। कई पूंछ में धागा बांधकर उन्हें उड़ाते हैं। परन्तु इस तरह इन पतंगों को तंग करना अच्छा नहीं। ये हमारा कोई अपकार नहीं करते, बल्कि मच्छर आदि, को खाकर हमारा उपकार ही करते हैं।

करीब-करीब दो हजार तरह के पतंगे हैं। परन्तु सब, सब देशों में नहीं मिलते। अमेरिका में ही २०० तरह के पतंगे हैं। जाति के अनुसार पतंगों का रंग, पंखों का रंग, उनकी लम्बाई चौड़ाई भिन्न होती है।

पतंगे आहार की खोज में भूमि से अधिक ऊपर नहीं उड़ते। कई तरह के पतंगे तो भूमि पर ही रहते हैं। इनके रास्ते में अगर कोई आ जाये तो
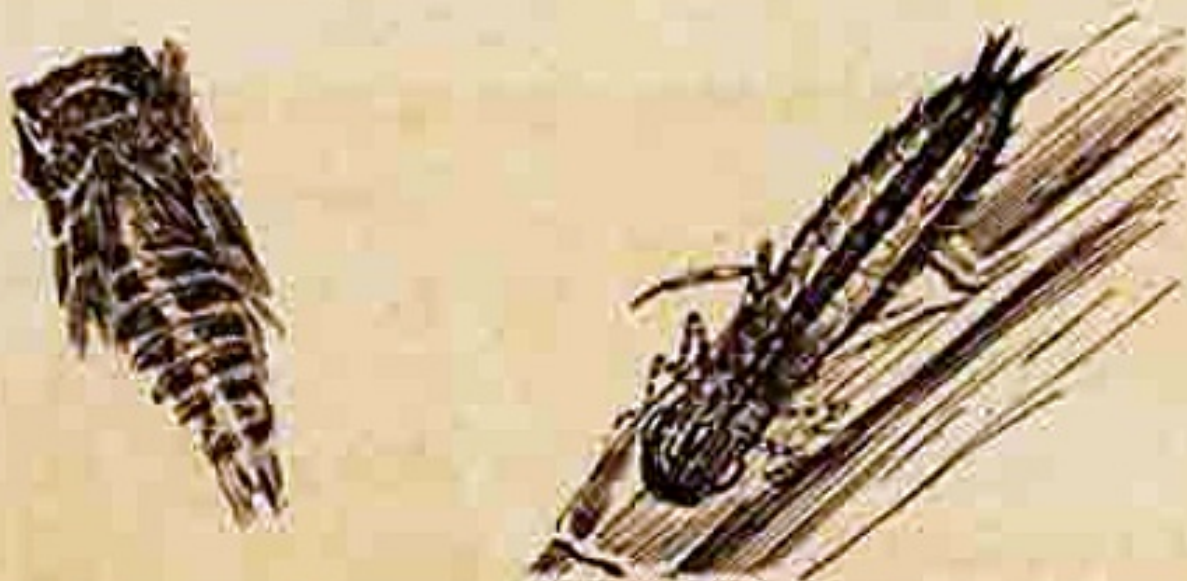
वे वहां से वे हट जाते हैं और फिर वापिस आ जाते हैं। और कई तरह के पतंगे ऐसे हैं जो आकाश में बहुत दूर उड़ते हैं और वहां कृमि-कीट खाते हैं।

हम यह देख सकते हैं कि पतंगे के शरीर में सबसे बड़ा अंग सिर है। उस सिर में दो बड़ी आँखें होती हैं। एक एक बड़ी आँख में हज़ारों छोटी आँखें होती हैं। इन बड़ी आँखों के सिवाय पतंगों की मामूली आँखें भी होती हैं। पतंगे आगे के पैरों को हाथ के रूप में बरतते हैं। उससे न केवल खाना ही बटोरते हैं परन्तु कभी-कभी अपनी आँखें भी पोंछते हैं।

तरह तरह के पतंगे, तरह के कीड़े-मकोड़े खाते हैं। कई पतंगे दूसरे पतंगों को भी खाते हैं। परन्तु आहार आदि के विषय में वे मनुष्य का एक अपकार करते हैं। वे शहद के छत्ते खाते हैं। इसलिए शहद के छत्ते रखनेवाले यदि पतंगे को शत्रु समझते हों तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं।

बागों में रहनेवाले पतंगे जब अपना स्थान निश्चित कर लेते हैं, वे अपने 'राज्य' में दूसरों को नहीं आने देते। अगर कोई आ भी जाता है तो,

'अहिंसा पूर्वक' उनको भगा देते हैं। इस भगदौड में किसकी विजय होती है, हम नहीं कह सकते। अगर हवा में, एक दूसरे के आमने सामने वे उड़ रहे हों, तो अनुमान किया जा सकता है कि ये एक ही स्थान के लिए लड़ रहे हैं। थोड़ी देर में 'विजयी' पतंगा, अपनी जगह पर आ बैठता है।

मादा पतंगे, पानी में अंडे देते हैं। वे पानी के तह में फूट कर 'जल कृमि' बनते हैं। जितनी जातियाँ पतंगों में हैं, उतनी जलकृमियों में भी हैं, ये पानी के तह में ही खा-पीकर बड़े होते हैं। कई जलकृमि हिलते ही नहीं, कई पानी को शरीर में लेकर हिल जाते हैं। इसे जेट प्रोपेल्शन कहते हैं। जल-कृमियों की जीभें बड़ी विचित्र होती हैं। इन्हें मोड़ा भी जा सकता है।—इनके सिरे पर—तेज दान्त से होते हैं, जिससे आहार पकड़ा जा सकता है।

पानी के तह में बड़े होनेवाले जल कृमि वसन्त में, रात के समय, जब कोई शत्रु समीप नहीं होता, प्रकृति की प्रेरणा से, किसी पौधे के सहारे ऊपर चले आते हैं और वहीं रह जाते हैं। तब उनकी पीठ फूट-सी जाती है।—उसमें से पतंगे निकलते हैं, पर उनके पंख चिपके से होते हैं—थोड़ी देर बाद वह चिपकन चली जाती है और पतंगे अपने नया जीवन शुरु कर देते हैं।

चित्र - कथा

एक दिन शाम को दास और वास "टाइगर" को साथ लेकर शहर से बाहर टहलने गये। रास्ते में एक मेंढा उनके पीछे लग गया। वह यहाँ वहाँ चर रहा था। दास और वास डर कर भाग गये। मेंढा पीछा कर रहा था। वे एक तख्ते पर से, पास के रजबाह को पार कर रहे थे कि टाइगर भी उनके पीछे आया। पीछा करता करता मेंढा जब तख्ते के पास आया तो टाइगर ने मुख से तख्त हटा दिया। और मेंढा नहर में जा गिरा।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Private Ltd., and Published by him for Chandamama Publications, from Madras 26.—Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

Photo by S. H. Kotak

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

प्यार है मगर शृंगार नहीं

प्रेषक :
नन्दगोपाल नैयर, नागपुर

CHANDAMAMA (Hindi) JUNE 1958 Regd. No. M. 5452

रूपधर की यात्राएँ